बोल बम् भजनावली
प्रकाशक :
बोल बम् काँवड़ संघ
कलकत्ता-७०० ००७
बोल बम्

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

बोल बम् भजनावली

●

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥

●

प्रकाशक :

बोल बम् काँवड़ संघ

(स्थापित सन् १९८४)

२०१-बी, महात्मा गांधी रोड

(सदासुख कटरा)

कलकत्ता-७०० ००७

तृतीय संस्करण

प्रति—२०००] सन् १९८८ [मूल्य—अमूल्य

भावना :

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात् ।
शान्तो मुच्येत् बन्धेभ्यः मुक्तस्त्वन्यान् विमोचयेत् ।।

दुर्जन प्राणी सज्जन बन जाँय, सज्जन प्राणी शान्ति लाभ करें। शान्त प्राणी बन्धनों से मुक्त हों, मुक्त प्राणी दूसरों की मुक्ति के काम में लग जाँय।

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री बासुदेव शर्मा
३, श्री सत्यनारायण टेम्पुल रोड,
बांधाघाट, सलकिया, हवड़ा-६

श्री रामप्रसाद देवड़ा
२०१-बी, महात्मा गांधी रोड,
कलकत्ता-७

श्री सांवरमल कसेरा
१, जदुलाल मल्लिक रोड,
कलकत्ता-६

मुद्रक :
ओरीयन्ट ग्राफीक
३५४, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-६
दूरभाष : ५५-५७१७

दो शब्द

माया के कारण मनुष्य दुःखी, अशान्त होकर पतित व भ्रष्ट आचरण करने लगता है और पश्चात् धर्म के पथ से विचलित हो अधर्म में लिप्त हो जाता है। ऐसे अवसर पर धर्मावलम्बी मनुष्य सत्संग के माध्यम से प्रवचन, भगवत्कथा, भजन व कीर्तन के द्वारा अधर्म में लिप्त मनुष्यों को कल्याणकारी मार्ग दिखाते हैं। यह प्रक्रिया इस भौतिक संसार में अनवरत चलती रहती है। किन्तु विशेष अवसर पर स्वयं भगवान साकार शरीर का आधार लेकर धर्मभ्रष्ट संसार का उद्धार करने के लिये तथा संसार में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करने व धार्मिक व्यवस्था स्थापित करने के लिये ब्रह्मलोक से पृथ्वी पर उतर कर कल्याणकारी कर्त्तव्य करते हैं। ऐसी व्यवस्था होने पर मनुष्य सत्संग में जाते व तीर्थाटन करते हैं। जहाँ-तहाँ भक्तों की मण्डली भजन-कीर्तन करती विचरती है। कोई कृष्ण के गीत गाते, कोई राम की धुन लगाते, कोई माँ भवानी के गीतों में रमते और कोई शिव के भजनों में खो जाते हैं। शिव के भजनों में मस्त हो जाने के लिये ही श्रावणी मेले के शुभ अवसर पर "बोल बम् काँवड़ संघ" की ओर से "बोल बम् भजनावली" का प्रकाशन भक्तों के लिये किया गया है। भजनावली से अधिकाधिक भक्ति रस का पान कर भक्तगण परिश्रम और अर्थ को सार्थक करेंगे।

शिव : शरणम्

कामाख्या प्रसाद शर्मा
१८, गोबिन्द बनर्जी लेन, बांधाघाट,
सलकिया, हवड़ा-६
फोन : ६६-३१४७

गीता - सार

१ क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो ? किससे व्यर्थ डरते हो ? कौन तुम्हें मार सकता है ? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।

२ जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।

३ तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो ? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया ? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया ? न तुम कुछ लेकर आये, जो लिया, यहीं से लिया। जो दिया, यहीं पर दिया। जो लिया इसी (भगवान) से लिया। जो दिया इसी को दिया। खाली हाथ आए, खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों का कारण है।

४ परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन सकते हो, दूसरे ही क्षण तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा अपना-पराया, मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

५ न यह शरीर तुम्हारा है न तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो ?

६ तुम अपने आप को भगवान को अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है।

७ जो कुछ तुम करते हो, उसे भगवान को अर्पण करते चलो। ऐसा करने से तुम सदा जीवन मुक्ति का आनन्द अनुभव करोगे।

तीन महत्वपूर्ण बातें

१—ये तीन पूज्यनीय हैं—देव, शास्त्र और गुरु।

२—यहाँ तीन सच्चे रत्न हैं—दर्शन, ज्ञान और चरित्र।

३—तीन चीजें इन्तजार नहीं करती—समय, मौत और ग्राहक।

४—तीन चीजें निकलने पर वापस नहीं होती—तीर कमान से, बात जबान से और प्राण शरीर से।

५—तीन चीजें परदे के योग्य हैं—धन, स्त्री और भोजन।

६—तीन से बचना चाहिये बुरी संगत, स्वार्थ और निन्दा।

७—तीन चीजों में ध्यान से उन्नति है—ईश्वर, मेहनत और विद्या।

८—तीन चीजें कभी न भूलना कर्ज, फर्ज और मर्ज।

९—इन तीन का सम्मान करें—माता, पिता और गुरु।

१०—तीनों को हमेशा वश में रखें—मन, काम और क्रोध।

११—तीन चीजों के सेवन से बचें—मांस, मदिरा और पर स्त्री।

क्या लेना - क्या देना

१—लेना चाहते हो तो आशीर्वाद लो।
२—देना चाहते हो तो नीची निगाह से दो।
३—खाना चाहते हो तो क्रोध को खाओ।
४—मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।
५—जानना चाहते हो तो—परमेश्वर को जानो।
६—जीतना चाहते हो तो तृष्णा को जीतो।
७—पीना चाहते हो तो ईश्वर चिन्तन का शरबत पीओ।
८—पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
९—करना चाहते हो तो दुखियों की सहायता करो।
१०—छोड़ना चाहते हो तो झूठ को छोड़ो।
११—बोलना चाहते हो तो मीठे वचन बोलो।
१२—तोलना चाहते हो तो अपनी वाणी को तोलो।
१३—देखना चाहते हो तो अपने अवगुण देखो।
१४—सुनना चाहते हो तो गरीबों की पुकार सुनो।
१५—पढ़ना चाहते हो तो महापुरुषों का जीवन पढ़ो।
१६—दर्शन करना चाहते हो तो देव दर्शन करो।
१७—चलना चाहते हो तो सत्संग के लिये चलो।
१८—पहचानना चाहते हो तो आत्मा को पहचानो।

समझने की बातें

१ जब आप देना शुरुं करेंगे तो आपके पास आना शुरुहो जायेगा।

२ जिसके अन्तःकरण में सच और झूठ, अच्छा और बुरा इसका विवेक करने वाली बुद्धि जाग गई है, उसका नाम होता है 'पंडित'

३ सच्चा मनुष्य गुस्सा आने पर सहने की कोशिश करता है, कुछ बोलता नहीं।

४ जिसका तिरस्कार होता है उसका अहित नहीं होता, जिस शरीर से तिरस्कार की भावना निकलती है, उसका अहित होता है।

५ जब भाग्य अनुकूल होता है तो बिना उद्योग के ही इष्ट सिद्धि हो जाती है।

६ जो भगवान का एकमात्र आश्रय ग्रहण करता है, भगवान स्वयं आकर उसकी रक्षा करते हैं।

७ किसी के दोष हमें उसी समय देखना चाहिए जब उसने यह जिम्मेवारी हमको सौंप दी हो।

काँवड़ियों का आवश्यक सामान

काँवड़ १ कलशा या डिब्बा २ छींका २ थैला १ लोटा १ टार्च १ गंजी २ गमछा २ जांगिया २ चद्दर २ तिरपाल या प्लास्टिक दो गज का १ चाकू १ छन्नी १ रस्सी, मोमबत्ती, दियासलाई, कपूर, अगरबत्ती, प्रसाद।

काँवड़ के नियम

१ ब्रह्मचर्य का पालन तथा धर्माचरण करना।

२ शरीर में तेल व साबुन न लगाना तथा हजामत न करना।

३ चारपाई पर न सोना, जूते न पहनना।

४ गन्दे शब्दों का प्रयोग न करना।

५ चलते समय बोल बम का उच्चारण करना।

६ सत्य बोलना तथा दूसरे की निन्दा न करना।

७ कांवड़ियों की राह में मदद करना।

८ प्रातः उठकर शौच जाना पश्चात् स्नान करना।

९ मन बहलाने का कोई साधन साथ न रखना।

१० भजन, प्रार्थना, ध्यान, जपादि में अधिक से अधिक समय लगाना।

११ मादक वस्तु का प्रयोग न करना।

१२ मन-क्रम वचन से पवित्र रहना।

१३ किसी से झगड़ा नहीं करना, प्रेम से रहना।

१४ मधुर वाणी बोलना, कड़वे वचन का त्याग करना।

१५ काँवड़ को पवित्र रखना, स्पर्श-दोष से बचाना।

१६ आरती के समय मन को विचलित नहीं करना।

१७ दूसरे का दोष नहीं देखना तथा अपने को दोष से मुक्त रखना।

१८ चमड़े से बनी वस्तु का व्यवहार नहीं करना।

१९ सौन्दर्य सामग्री का व्यवहार नहीं करना।

२० विलासितापूर्ण सामग्रि का त्याग करना।

२१ प्याज, लहसून, मांसादि न खाना।

बैद्यनाथधाम मार्ग विवरण

		मील
✽	सुलतानगंज से असरगंज	९
✽	असरगंज से रणगाँव	२
✽	रणगाँव से तारापुर	२
✽	तारापुर से रामपुर	५
✽	रामपुर से कुमरशालनदो	५
✽	कुमरशालनदी से जलेबियामोड़	५
✽	जलेबियामोड़ से सुईंया	६
✽	सुइया से अबरखा धर्मशाला	४
✽	अबरखा से कावड़िया धर्मशाला (कटोरिया)	४
✽	कटोरिया से इनाराबन	६
✽	इनाराबन से गोड़ियारी नदी	५
✽	गोड़ियारी नदो से झाझा धर्मशाला (पटनीया)	३
✽	झाझा धर्मशाला से कलकत्तीया धर्मशाला	३
✽	कलकत्तीया धर्मशाला से दर्शनीया	४
✽	दर्शनीया से बाबाधाम मन्दिर	१
		कुल ६४ मील

✽ तारांकित स्थानों में ठहरने की व्यवस्था है।

॥ गणेश स्तुति ॥

गजाननं भूतगणाधि सेवितं कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम् ॥

सबसे पहले सुमिरिये गौरी पुत्र गणेश ।
पांच देव मिल रक्षा करे ब्रह्मा-विष्णु-महेश ॥

म्हाने बुध दीजो महाराज, गजानन्द गौरी के नन्दा ।
पिता तुम्हारा है शिवशंकर, मस्तक पर चन्दा ॥ (गजानन्द)
माता तुम्हारी है पार्वती, ध्यावे सब बन्दा ।
मूषक वाहन सूंड़ सुंड़ाला, फरस हाथ लम्बा ॥ (गजानन्द)
गल बैजन्ती माल बिराजे, चढ़ें पुष्प गधां ।
जो नर तुमको नहीं मनावे, उसका भाग्य मन्दा ॥ (गजानन्द)
जो नर तुमरी करे ध्यावना, चले सतत धन्धा ।
विघ्न निवारण मंगल कारण, कटें सभी फंदा ॥ (गजानन्द)

श्री गणेशजी महाराज की जय

गाइये गणपति जग बन्दन ।
शंकर सुवन भवानी के नन्दन ॥
सिद्धि सदन गज-बदन बिनायक ।
कृपा - सिन्धु सुन्दर सब लायक ॥
मोदक प्रिय मृदु मंगल दाता ।
विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥
मांगत तुलसीदास कर जोरें ।
बसहिं राम सिय मानस मोरे ॥

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

(तर्ज—तावड़ा मन्दो पड़ज्यारे-२ राग मारवाड़ी)

गजानन्द आनन्द करियो जी-२
म्हे धरां चरणमें शीश, नाथ म्हारी अरजी सुनियो जी
॥ टेर ॥

पिता तुम्हारो महादेव हैं नान्देवश्र साजे—गजानन्द-२
माता तुम्हारी है, गिरजा, सिंह चढ़ी गाजे
म्हारे घर मंगल करियो जी................॥ टेर ॥

सूंड़ सुंडाला, दून्द-दुन्दाला, एक दन्त साजे-२
गल पुष्पन की माल विराजे, कोटि काम लांजे
म्हारा सब दुःखड़ा हरियो जी..............॥ टेर ॥

विघ्न निवारण, मंगल कारण, राजन पति राजे-२
तुलसीदास गणपतजी न सुमरया, दुख दारिद्र भाजे
म्हारे पर कृपा करियो जी............... ॥ टेर ॥

सब देवा मँ प्रथम मनावाँ, धरा चरण म शीश-२
"काँवड़ संघ" कहवे गजानन्द, देवो शुभ-आशीष
काज म्हारा पूरण करियो जी...............॥ टेर ॥

श्री शिव पूजन विधि

भगवान् श्री शिव का ध्यान कर आवाहन करें

सब कामनाओं की सिद्धि के लिये मैं आपका आवाहन करता हूं। मुझपर कृपा करके इस विग्रह में आकर निवास कीजिये।

१ पाद्य—गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुए उत्तम जल को आपके पाद-प्रक्षालन के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

२ अर्घ्य—गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुए उत्तम जल को आपके हस्तांजलि के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

३ आचमन—गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुए उत्तम जल को आपके मुखाचमन के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

४ पंचामृत स्नान—दूध, दहि, घृत, मधु व शर्करा से विनिर्मित पंचामृत को आपके स्नानके लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

५ शुद्ध स्नान—गंगा आदि सभी तीर्थों से लाये हुये उत्तम जलको आपके शुद्धि स्नान के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

६ वस्त्र-उपवस्त्र—कलाकौशल पूर्वक सूत्रों द्वारा निर्मित सभी अंगों के आभरण स्वरूप इन दोनों वस्त्रों को आपके धारण के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

७ गंध—केसर, अगर, कस्तूरी व कपूर से मिले हुए चन्दन को आपके लेपन के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

८ अक्षत—सुन्दर गन्ध-युक्त अक्षत् (चावल) को आपके मस्तक पर धारण के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

९ पुष्प व पुष्पमाला—उत्तम सुरभित पुष्प व सुगन्धित पुष्प माला को आपके धारण करने के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

१० विल्व—त्रिगुणात्मक, त्रिनेत्र स्वरूप, त्रिजन्म पाप संहारक, त्रिदल युक्त अखण्ड विल्व-पत्र को आपके भाल के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

११ धूप—अनेक रंगों से युक्त तथा चन्दन आदि से निर्मित सुगंधित धूप को आपके गन्ध के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

१२ दीप—सुन्दर प्रकाश फैलाने वाले तथा चारों ओर के अन्धकार का अपहरण करने वाले एवं बाह्य तथा अभ्यन्तर दोनों प्रदेशों को प्रकाश देने वाले दीपक को आपके दर्शनार्थ अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

१३ नैवेद्य—विविध प्रकार के खाद्य पदार्थों से युक्त तथा दिव्य षड्-रस से परिपूर्ण मिष्टान्न को आपके भोजन के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

१४ ताम्बूल-पूंगीफल—सुपारी, लवंग, इलायची सहित दिव्य ताम्बूल को आपके मुख-शुद्धि के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

१५ ऋतुफल—सुन्दर, सुमधुर नाना प्रकार के फलों को आपके भोग के लिये अर्पित करता हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

२६ द्रव्य दक्षिणा—कुबेर से प्राप्त धन को आपके लिये अर्पित करता हूं। आपकी वस्तु आपको ही भेंट कर रहा हूं। आप इसे स्वीकार कीजिये।

॥ संक्षिप्त पूजन ॥

१—स्नानं समर्पयामि नमः ॥
२—चन्दनं समर्पयामि नमः ॥
३—पुष्पं-पुष्पमालां समर्पयामि नमः ॥
४—विल्वपत्रं समर्पयामि नमः ॥
५—धूपं आघ्रार्पयामि नमः ॥
६—दीपं दर्शयामि नमः ॥
७—नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥
८—आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥
९—फलं समर्पयामि नमः ॥
१०—दक्षिणां समर्पयामि नमः ॥

अभिषेक स्नान

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः याते रुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी. तथा नस्तन्वाशन्तमया-गिरि शन्ताभिचाकशीः। यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे शिवांगिरित्रतांकुरु महि ७ सीः पुरुष जगत्। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ७ सुमना-असत् अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यौ भिषक्। अहींश्च सर्वांजन्भयन् सर्वाश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव। असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमंगलः येन चैन ७ रुद्रा अभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशो बैषा ७ हेड ईमहे। असौ यो वसर्पति नीलग्रावो विलोहितः उतैनंगोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयातिनः। नमोऽस्तु नीलग्रोवाय सहस्राक्षाय मीढ़षे अथो ये अस्ल सत्वानोऽहं तेभ्यो करन्नमः प्रमुश्चधन्वनस्त्वमु-भयोरात्र्नोंर्ज्यिाम्, याश्च ते हस्त इषवः पराया भगवो वपः। विज्ज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां २ उत अनेशन्नस्य या इषवः अभुरस्य निषंगधोः। याते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूवते धनुः तयास्मान विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज. परितेधन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तुविश्वतः अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधे-हितम्। अवतत्य धनुष्ट्व ७ सहस्राक्षशतेषुधे निषीर्य-शल्यानामुखा शिवो नः सुमनाभव नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यान्तवधन्वने मानो महान्त-मुतमानो अर्भकम्मान उक्षन्तमुतमान उक्षितम्। मानो बधोः

पितरम्भो मातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः मानस्तोके तनये मान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः। मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे।

—०—

हरदम यही जपाकर यही बड़ा लाभ है

हरि ॐ सत्सत् हरि ॐ तत्सत्
जपाकर जपाकर हरि ॐ तत्सत्

जब श्वास निकले जबांपर यही हो—हरि ॐ
जिधर देखो बस एक दृष्टि यही हो—हरि ॐ
कानों में भी शब्द आकर यह गूंजे—हरि ॐ
कोई तुम से पूछे उसे यह सुनाओ—हरि ॐ
जो बोलो किसी से तो यह बोल बोलो—हरि ॐ
जो सुख चाहते हो तो रटो उसी को—हरि ॐ
है केवल परम सुख शान्ति सरोवर—हरि ॐ

●

बोलबम ! ❀ शिव आरती ❀ बोलबम !

गजाननंभूत गणाधि सेवितम् कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकम् नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ॥

कर्पूर गौरं करुणाबतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारं ।
सदा बसन्तं हृदयार विन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि ॥

शीश गंग अर्द्धङ्ग पार्वती, सदा विराजत कैलाशी ।
नन्दी भृङ्गी नृत्य करत है, गुण-भक्तन शिव के दासी ।।

शीतल मन्द सुगन्ध पवन जहाँ, बैठे हैं शिव अविनाशी ।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर, राग - रागिनी अतिगासो ।।

यक्ष-रक्ष भैरव जहाँ डोलत, बोलत हैं वन के वासी ।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भंवर करत है गुंजासी ।।

कल्पद्रुम अरू पारिजात तरू, लाग रहे हैं लक्षासी ।
कामधेनु कोटिक जहाँ डोलत, करत दुग्ध की वर्षा सी ।।

सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त भव के वासी ।
छहो तो ऋतु नित फलत रहत है, पुष्प चढ़त है वर्षासी ।।

देव-मुनिजन की भीड़ पड़त है, निगम रहत जो नित गासी।
ब्रह्मा-विष्णु हर को ध्यान धरत है, कछु शिव हमको फरमाशी ॥

ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुखरासी।
जिनको सुमिरण सेवा करता, टूट जाय यम की फाँसी ॥

त्रिशूलधर जी को ध्यान निरंतर, मन लगाय कर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तन की, जन्म-जन्म शिव पद पासी ॥

कैलाशी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुधि लीजो।
सेवक जान सदा चरनन को अपनो जान कृपा कीजो ॥

आप तो प्रभु जी सदा सयानें, अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो ॥

अभय दान दीजो प्रभु मोहे, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोले नाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन भव शुभकारी ॥

काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भवानी भोले बाबा, हर हर शंकर त्वमशरणम् ॥

नमः पार्वती पते हर हर काशी विश्वनाथ गंगे।
हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे ॥

धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो प्राणियों में सद्भावना हो,
विश्व का कल्याण हो।

॥ हर हर महादेव ॥

॥ आरती श्रीमहादेवजी ॥

कर्पूर गौरं करुणाबतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारं ।
सदा बसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि ॥

जय शिव ओंकारा, हो शिव पार्वती प्यारा ।
हो शिव ऊपर जल धारा ॥
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धङ्गी धारा ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥
एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे ।
हँसासन, गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥
दोय भुज चार चतुर्भुज दसभुज ते सोहे ।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥
अक्षमाला, वनमाला, रुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक, प्रभुतादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥
कर मध्येर कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता ।
सुख कर्त्ता दुःख हर्त्ता, जग पालन कर्त्ता ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥
ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर दौ मध्ये, ये तीनों एका ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥
काशी में विश्वनाथ विराजे, नन्दो ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावत, सेवत नर नारी ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥

त्रिगुणा स्वामीजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ हर ३ महा० ॥

जय शिव ओंकारा, शिव पार्वती प्यारा,
शिव गल रुण्डन माला ।
शिव बैल चढ़न वाला, शिव भूरी जटा वाला,
शिव ऊपर जल धारा ।
शिव ओढ़त मृगछाला, शिव पीवत भङ्ग प्याला,
शिव रहते मतवाला ।
जटा में गंग विराजत, मस्तक पर चन्द्रा ॥ ॐ हर ३ महादेव ॥

॥ आरती श्रीभोलेनाथजी ॥

भोलानाथ अमली म्हारा शंकर अमली ।
बगिया में भंगीया घोटाय राखूँली ॥
रतन कटोर बिजियां छाण राखूँली ॥ टेर ॥

काँउँ बोऊँ काशीजी में कांईं जी प्रयाग ।
काँउँ बोऊँ हर की पैड़ी काँईं जी कैलाश ॥

काशीजो में केशर बोउँ चन्दन प्रयाग ।
हर की पैड़ी विजियां बोउँ धतुरा कैलाश ॥

काँईं मांगे नांदियो जी काँईं जी गणेश ।
काँईं मांगे भोला शम्भू योगिया को भेष ॥

दुर्वा मांगे नाँदियो जी मोदक गणेश।
विजिया मांगे भोला शम्भू योगिया के भेष॥
घोट घोट नांदियो जी छाणत गणेश।
भर भर प्याला देवै गौरजा पीवे रे महेश॥
आकड़ा की रोटी पोऊँ धतुरा को साग।
विजया की तरकारी छिमकू जीमो भोलानाथ॥
भूखा मांगे अन्न धन राजा मांगे रूप।
कुष्टो मांगे निर्मल काया बांझ मांगे पूत॥
नाचे नाचे नांदियो जी नाचे रे गणेश।
नाचे म्हारा भोलानाथ योगिया को भेष॥
कैलास पर्वत तपै महादेव नन्दियो चेलो साथ।
सब भक्तों को जायो बैकुण्ठा में बास॥
भौलानाथ अमली म्हारा शंकर अमली।
बगिया में भंगिया घोटाय शखूँली॥

॥ शिव स्तुति ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

सेवा पूजा बन्दगी सभी आपके हाथ।
मैं तो कुछ जानू नही आप जानो भोले नाथ॥
शिव समान दाता नहीं विपुद निवारण हार।
लज्जा सबकी राखियो शिव बैलन असवार॥

सिंह चढ़ो दुर्गा मिली गरुड़ चढ़े भगवान।
बैल चढ़े बाबा मिले पूरण होय सब काम ।।
बाबा बाबा सब कहे मैया कहे न कोय।
बाबा के दरबार में मैया कहे सो होय ।।
भेज रहा हूं प्रेम फूल हे भोले तुझे रिझाने को।
हे भूतेश्वर भूल न जाना हम सब की बात मनाने को ।।
कोई कहे कैलाशपति कोई कहे भोले नाथ।
हम तो कहें सबकी सुने बाबा बैद्यनाथ ।।
ॐ नाम में सार है नाम रटो भोले नाथ।
बिगड़ी बात संवारना बाबा ताड़कनाथ ।।
बाबा तो कैलाशपति संग में गौरी गणेश ।।
सब भक्तों की बिनती सुनिये हे भूतेश ।।
काली दुर्गा विन्ध्याचल नाम रटे सब कोय।
मैया के दरवार से खाली जाय न कोय ।।

बोलो शिवशंकर भगवान की जय
बोलो बाबा बैद्यनाथ की जय
बोलो बाबा बासुकीनाथ की जय
बोलो काशी विश्वनाथ की जय
बोलो बाबा ताड़कनाथ की जय
बोलो बाबा भूतनाथ की जय
बोलो बाबा लोकनाथ की जय
बोलो बाबा सिद्धनाथ की जय
बोल बम् , बोल बम् बोल बम्

श्री शिवाष्टकम्

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथनाथं सदानन्दभाजम् ।
भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ १ ॥

गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकालकालं गणेशाधिपालम् ।
जटाजूटगङ्गोत्तरङ्गैर्विशालं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ २ ॥

मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महामण्डलं भस्मभूषाधरन्तम् ।
आनादि ह्यपारं महामोहमारं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ३ ॥

तटाधोनिवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदा सुप्रकाशम् ।
गिरीशं गणेशं सुरेशं महेशं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ४ ॥

गिरीन्द्रात्मजासंगृहीतार्धदेहं गिरौ संस्थितं सर्वदासन्नगेहम् ।
परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्द्यमानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ५ ॥

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम् ।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ६ ॥

शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्दपात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ।
अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ७ ॥

हरं सर्पहारं चिताभूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारम् ।
श्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ८ ॥

स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणेः पठेत्सर्वदा भर्गभावानुरक्तः ।
सुपुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रं समासाद्य मोक्षं प्रयति ॥ ९ ॥

॥ इति श्री शिवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री शिवमहिम्नः स्त्रोतम्

गजाननं भूतगणाधिसेवितम् कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ॥

ॐ भद्रं कर्णेभि शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभि-
र्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां, जड्यान्धकारापहाम्
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

वक्तारमासाद्य यमेव नित्या, सरस्वती स्वार्थसमन्विताभूत् ।
निरस्तदुस्तर्ककलङ्कपङ्का, नमामि तं शङ्करमर्चिताङ्घ्रिम् ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

॥ श्री पुष्पदंतउवाच ॥

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्य सदृशी,
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्ना स्त्वयि गिरः !
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामवधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर ! निरपवादः परिकरः ॥

अतीतः पन्था नं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदय रक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणाभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद ! रमणीयामरमणीं
विहंतुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपाय स्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो।
यतो मंदास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्याद् ऋजुकुटिल नानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद! तंत्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति तु भवद् भ्रू प्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषय मृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपर स्त्वध्रुवमिदं
परोध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन ! तैर्विस्मित इव
स्तुवन्जिह्रेमित्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरंचिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं याता वनलमनिलस्कंधवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्नफलति ॥१०॥

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यति करम्
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकंडू परवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणी रचित चरणांभोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

यद्द्धिं सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कंठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपिश्लाघ्यो भुवनभय भङ्गव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्तेनित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरःस्मर्त्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृत जटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥

वियद्व्यापि तारा गणगुणित फेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो—
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन् नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर ! जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता:-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुषफलबिधान व्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्रा कृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृग व्याधरभसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन ! पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्द्धघटना-
दवैति त्वामद्धा वत वरद ! मुग्धा युवतयः ॥२३॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर ! पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं नव भवतु नामैवमखिलं
तथाऽपि स्मर्तॄणां वरद ! परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद सलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदोलोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह हि यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरान्-
अकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिरभिदधत्तीर्ण विकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद ! गृणात्योमितिपदम् ॥२७॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव ! श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहित नमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर ! महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन ! यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥२९॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोत्पत्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद ! चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

असुर सुरमुनीन्द्रै रर्चित स्येन्दुमौले-
ग्रथिल गुण महिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकल गुण वरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥

अहरहरन वद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यः सदात्मा
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं होमयागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३५॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं सर्वमीश्वर वर्णनम् ।
अनौपम्यं मनोहारि पुण्यं गन्धर्व भाषितम् ॥३६॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरोमन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३७॥

कुसुम दशन नामा सर्व गन्धर्व राजः
शशिधर वरमौले र्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३८॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्त प्रणीतम् ॥३९॥

श्री पुष्पदन्त मुखपङ्कज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

इत्येषा वाङ्मयीपूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४१॥

यदक्षरं पदंभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव, प्रसीद परमेश्वरः ॥४२॥

हरि ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ इति श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं,
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्
जातीचम्पक बिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा,
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूर खण्डोज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं,
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया,
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो,
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥

श्रीशिवपंचाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ।। १ ।।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ।। २ ।।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द—
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय बृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ।। ३ ।।

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य—
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ।। ४ ।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ।। ५ ।।

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।। ६ ।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

प्रार्थना

ॐ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्॥ १॥

शान्तम् पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रञ्च खड्गं परशुमभयदं, दक्षिणांगे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं, साङ्कुशं वामभागे
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं, पार्वतीशं नमामि॥ २॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥ ३॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ ४॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥ ५॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥ ६॥

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शंकरे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामान्यैस्तु किं कर्मभिः॥ ७॥

।। श्री गुरू बन्दना ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरूः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना ।।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना ।। गुरुदेव ।। १ ।।

करूनानिधि नाम तेरा, करूणा दिखलावो तुम,
सोये हुए भागों को, हे नाथ जगाओ तुम,
मेरी नैय्या भंवर डोले, उसे पार लगा देना ।। गुरूदेव ।। २ ।।

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो,
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो,
नित माला जपूँ तेरी, दिल से ना भुला देना ।। गुरूदेव ।। ३ ।।

पापी हूं या कपटी हूं, जैसा हूं मैं तेरा हूं,
घर बार छोड़ करके, जीवन से खेला हूं,
दुःख का मारा हूं मैं, मेरे दुखड़े मिटा देना ।। गुरूदेव ।। ४ ।।

मैं सबका सेवक हूं, तेरे चरणों का चेरा हूं,
नहीं नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूं,
तेरे दर का भिखारी हूं, मेरे दोष मिटा देना ।। गुरुदेव ।। ५ ।।

॥ भजन ॥

(पितरदेव की स्तुति)

जय - जय पितरजी महाराज मैं शरण पड्यो हूँ थारी।
शरण पड्यो हूं थारी मैं शरण पड्यो हूँ थारी ॥ टेर ॥
आप ही रक्षक, आप ही दाता, आप ही खेवनहारे।
मै मुरख हूँ कछु नहिं जानू, आप ही हो रखवारे ॥ टेर ॥
आप खड़े हैं हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी।
हम सब जन है शरण आपकी, है ये अरज गुजारी ॥ टेर ॥
देश और परदेश सभी जगह, आप ही करो सहाई।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई ॥ टेर ॥
मैं भी आयो शरण आपकी, अपने सहित परिवार।
रक्षा करो आप ही सबकी, रटूँ मैं बारम्बार ॥ टेर ॥

॥ गिरजा शंकर स्तुति ॥

गईं भवानी भवन बहोरी, बंदि चरण बोली कर जोरी।
जय जय गिरिवर राज किशोरी, जय महेश मुख चन्द चकोरी ॥
जय गजबदन षड़ानन माता, जगत जननि दामिनि दुति गाता।
नहि तव आदि मध्य अवसाना, अमित प्रभाउ वेद नहिं जाना ॥
भवभव विभव पराभव कारिणी, विश्वविमोहनि स्वबस विहारिनि।
सुन्दर सहज सुशील सयानी, नाम उमा अम्बिका भवानी ॥
अजा अनादि शक्ति अविनाशिनि, सदा शम्भु अर्द्धंग निवासिनि।
जग संभव पालन लय कारिणी, निज इच्छा लीला बहु धारिणी ॥
सेवत तोहि सुलभ फल चारी, वरदायमी त्रिपुरारि पियारी।
देवि पूजिपद कमल तुम्हारे, सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥

।। श्रीहनुमान बंदना ।।

रघुपति राघव राजाराम पतितपावन सीताराम।
जय रघुनन्दन जय घनश्याम पतितपावन सीताराम॥

ना स्वर है ना सरगम है, ना लय ना तराना है,
बजरंग के चरणों में एक फूल चढ़ाना है ।। १ ।।

तुम बाल समय में प्रभु, सूरज को निगल डाले,
अभिमानी सुरपति के, सब दर्प मसल डाले,
बजरंग हुए तब से, संसार ने जाना है ।। २ ।।

सब दुर्ग ढ़हा करके, लका को जलाये तुम,
सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम,
प्रिय भरत सरिस तुमको श्रीराम ने माना है ।। ३ ।

जब राम नाम तुमने पाया ना नगीने में,
तुम चीर दिये सीना, सिया राम थे सीने में,
विस्मत जग ने देखा कपि राम दीवाना है ।। ४ ।।

हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तरयामी,
ये दीन हीन 'चंचल' अज्ञानी अभिमानी,
जब तुमने नजर फेरी, फिर कौन ठिकाना है ।। ५ ।।

॥ स्तुति ॥

भक्तों चलके एक बार, करलो बाबा से पुकार
बाबो दुखड़ो मिटावगो
आवगो बाबो दौड़ो दौड़ो आवगो ॥

सच्चे मनसे करो वन्दना, बोलबम् बोलबम् बोलो,
बाबा के दरपे जाकर, मन के दुखड़े खोलो ।
ओ भोले दानो है दातार, पल में भर दे वे भण्डार,
बिगड़ी बात बनावगो ॥ आवगो बाबो .....

सड़क तप है धूप पड़ है, पाव में पड़ गये छाले,
पग पग पर वो थारे संग में, काँवड़ थारी सम्भाले ।
बाबो सबको मददगार, रस्तो करसो सब को पार,
काँवड़ सबकी चढ़ावगो ॥ आवगो बाबो......

रास्ता बड़ा कठिन है भाई चलना खूब सम्भलके
कही सड़क है कही नदी है कही पहाड़ी चढ़के ।
हिम्मत आके बन्धावगो ॥ आवगो बाबो .....
रस्तो आकर दिखावगो ॥ आवगो बाबो......

॥ भजन ॥

मेरा शिव शंकर है भोला, मेरा शिव शंकर है भोला।
ऊँचे पर्वत धुनी रमाये चढ़ा भंग का गोला॥ टेर॥

लगा समाधि बैठ गये हैं ध्यान में देखो ईश्वर के
कामदेव भी तुला हुआ है सत को डिगाने शंकर के।
तब शंकर जी क्रोध में आके नैन तीसरा खोला॥ १॥ मेरा०

भस्मासुर को वर देकर के खेले अपनी जान से,
कह भस्मा शंकर को जला के रखूँगा गौरा पास में (सानसे)
बन बैठूँ भगवान यो बोले जला भस्म का चोला॥ २॥ मेरा०

भागीरथ ने वर में मांगी शिव से गंगा माई रे
अपने कुल को त्याग दिया ओर खुद भी मुक्ती पाई रे
ले परीक्षा अपने भक्त की सत के कांटे तोला॥ ३॥ मेरा०

ध्यान लगा कर सुनो प्रेम से जो शंकर को ध्यावेगा
वो इन्सान भोले से भैया मन की मुरादे पायेगा।
भरी सभा में भजन सुनाये शिव मण्डल का टोला॥ ४॥ मेरा०

॥ बोल बम्॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—राग मारवाड़ी तोरण)

चालो ऐ सखियाँ चाला हिमाचल के द्वारे राज।
गौराबाईं को बीन्द निरखस्या गोरो है या कालो राज।
ऐसा कामण म्हार शिव भोला न सोहे राज।
शिव भोल न सोह यो तो गोराबाईं न मोहे राज॥ १॥
चालो ऐ .....

बाघम्बर का वस्त्र पहने, अङ्ग विभूति रमाव राज।
मस्तक पर एक चन्द्रमा सोहे, जटामें गंग विराजे राज।
काना म थारे कुण्डल सोहे, गल सर्पों की माला राज।
नन्दी की असवारी सोहे, त्रिशूल हाथ म धारया राज।
चालो ऐ .....

भाँत-भाँत का आया बराती, कोईं लूला कोईं लंगड़ा राज।
भाँत-भाँत का आया बराती कोईं अन्धा कोईं बहरा राज।
देखन म तो चोखा लाग, पर बोली का गूंगा राज।
भूत प्रेत ने साग ल्याया, शिव को रूप अनोखो राज॥३॥
चालो ऐ .....

भाँग धतूरा करे कलेवो, बिजिया खूब चढ़ावे राज।
शिव भोले का आया बराती पापड़ पातल खाब राज।
आया बराती पातल न तो पापड़ समझ कर खाव राज।
बची बचाई सारी जूठन, बाँध पोटली ले जाव राज॥ ४॥
चालो ऐ .....

शिव भोले का रूप देखकर, सखियाँ पाछी भागी राज।
सखियाँ यूँ कहवन लागी बिंद बड़ो ही भुंड़ो राज।
गौरा बाई तो चान्द सरिखि, बिंद कठ स आयो राज।
हाँस-हाँस कर सारी सखियाँ गौराबाई न चिड़ाव राज॥ ५॥
चालो ऐ .....

हाथ जोड़कर माता बोली, ई रूप न तजियो राज।
देखण म तो चोखा लागो, बी रूप म सजियो राज।
राज कुँवरसा आप बण्याजी, राजा जिस्या बराती राज।
ब्रह्मा विष्णु नाच गाव, आज हिमाचल नगरी राज॥ ६॥
चालो ऐ......

पूछो 'बम् मण्डल' न यो कामण कुण करयो छ राज।
म्हे नाही जाना यो तो "जोशी" कामण गारो राज।
जोशीजी न खूब नचास्या कामण ढिल्या छौड़ो राज।
नाच कूदकर भजन गास्या, शिव भोला क आग राज॥ ७॥
चालो ऐ .....

॥ भजन ॥

१ बम् भोले चले हैं कैलाश बुन्दिया पड़ने लगी।
शिव भोले चले हैं कैलाश बुन्दिया पड़ने लगी॥

२ पारवती ने बोय देईं हरी हरो मेंहदी।
शिव भोले ने बोय देईं भांग॥ बुन्दिया॥

३ पारवती ने सींच देईं हरी हरी मेंहदी।
शिव भोले ने सींच देईं भांग ॥ बुन्दिया॥

४ पारवती ने चूट लेईं हरी हरी मेंहदी।
शिव भोले ने घोट लेईं भांग॥ बुन्दिया॥

५ पारवती ने मांड लेईं हरी हरी मेंहदी।
शिव भोले ने छान लेईं भांग ॥ बुन्दिया॥

६ पारवती ने रँगाय लेईं हरी हरी मेंहदी।
शिव भोले ने उगाय लेईं भांग॥ बुन्दिया॥

७ बम् भोले चले कैलाश बुन्दिया पड़ने लगी।
शिव शंकर चले कैलाश बुन्दिया पड़ने लगी॥

॥ भजन ॥

१ कर दे दीनों का दुःख दूर हो बाघम्बर वाले।
कर दे सबों का दुःख दूर हो बाघम्बर वाले॥

२ कोई तो चढ़ावे शिवजी जल की ओ धारा।
कोई तो चढ़ावे कच्चा दूध हो बाघम्बर वाले॥

३ हरी हरी बेल की पत्तियाँ चुन्दन चावल।
और चढ़ाऊ फल फूल हो बाघम्बर वाले॥

४ आक धतुरा शिवजी को भोग लगत हैं।
भंगिया पियो भरपूर हो बाघम्बर वाले॥

५ नन्दी को असवारी सोहे प्रभुजी।
हाथ लिये त्रिशल हो बाघम्बर वाले॥

६ दास नारायण शरण तिहारो भोला।
अरजी करो मंजूर हो बाघम्बर वाले॥

॥ भजन ॥

भोले शंकर में भक्ति जगी थी। रोज जाने की धुन भी लगी थी॥
जाते-जाते ये मन में समाया। आना जाना ये नित का न भाया॥
रोज लंका से कैलाश जाना। करके दर्शन तुरत लौट आना॥
सोचा लंका में लेकर चलूँगा। प्यारी मूरत को कंधे पै लूँगा॥
मेरे भोले बनेंगे लंकावासी। सब तो भूलेंगे मथुरा व काशी॥
ब्रह्मा विष्णु को आना पड़ेगा डङ्का लङ्का में मेरा बजेगा॥
जाके कैलाश शिव को पुकारा। अब मैं आऊँ यहाँ ना दुबारा॥
चलके लंका में डेरा लगालो। चाहे जो कुछ भी मुझसे करालो॥
मुझको ले चल उठाके कहीं तुम। बीच रस्ते में रखना नहीं तुम॥
भोले शंकर को लेकर चला वो। बीच रस्ते हरि से छला वो।
वेग पेशाब का उसको आया। शिव - विग्रह हरि को थमाया॥
बैठा पेशाब करने को रावण। इक आयी बला बिन कारण॥
उसका पेशाब रुकता नहीं था। और धीरज भी बँधता नहीं था॥
आके देखा हरि तो नहीं है। और शंकर जमीं पर वहीं है॥
किन्तु मुश्किल था शिवको उठाना। बाकी पछताके घरको था जाना॥
छोड़ शंकर को लंकामें आया। संगमें कुछ ना 'कामाख्या' ही लाया॥

।। भजन ।।

जय भूतनाथ बाबा, भोले जय भूतनाथ बाबा।
तुमको निशदिन ध्यावत सुर नर मुनि बाबा॥ जय भूत०

कर त्रिशूल विराजत, और डमरू बाजे।
जटा में गंग की धारा, माथे चन्दा साजे॥ जय भूत०

नन्दी की असवारी सोहे तन पर मृग छाला।
कानों में कुण्डल सोहे, गले में मुण्डमाला॥ जय भूत०

तन पर भस्मी रमावे, संग गिरिजा माता।
सर्पों के गहने पहने, तुम शक्ति दाता॥ जय भूत०

तुम बिन ज्ञान न होवे, युक्ति न होवे बाबा,
भक्तों के रखवाले, तुम ही हो बाबा॥ जय भूत०

भांग धतूरा खावो, ध्यान में मतवाला।
शिखर कैलाश विराजो, तुम मुक्ति दाता॥ जय भूत०

या आरती भूतनाथ की, जो कोई नर गाता।
उर भक्ति अति आती, सुख सम्पत्ति पाता॥ जय भूत०

जय भूतनाथ बाबा, भोले जय भूतनाथ बाबा।
तुमको निशदिन ध्यावत, सुर नर मुनि बाबा॥ जय भूत०

बोल बाबा भूतनाथ की जय।
बोल सच्चे दरबार की जय॥

॥ भजन ॥

॥ बाबा भूतेश्वर भोलेनाथ बाबा भोले हैं ॥

माथे पर थारे ओ बाबा सोहे चन्द्रमा ।
थारे गले सर्पों का हार ॥
बाबा भोले हैं ॥ बाबा ॥

कानों में कुण्डल ओ बाबा थारे सोहे ।
थारी जटा गंग की धार ॥
बाबा भोले हैं ॥ बाबा ॥

नंदी की असवारी ओ बाबा थारे सोवे ।
थारे संग में गौरी गणेश ॥
बाबा भोले हैं ॥ बाबा ॥

आक धतूरा ओ बाबा थारे भोग लगे ।
थे तो भंगिया पीवो भरपूर ॥
बाबा भोले हैं ॥ बाबा ॥

भक्त मंडल बाबा ओ थासूँ अरदास करे ।
म्हाने दरस दिखाओ आज ॥
बाबा भोले हैं ॥ बाबा ॥

॥ बाबा भूतेश्वर भोलेनाथ बाबा भोले हैं ॥

—बम्—बम्—बम्—बम्—

—o—

॥ भजन ॥

(तर्ज—मिलो न तुम तो हम घबराये)

एक दिन वो भोले भण्डारी बनकर के ब्रजनारी गोकुल में आ गये हैं।
पार्वती भी मना के हारी न माने त्रिपुरारी, गोकुल में आ गये हैं॥
पार्वती से बोले मैं भी चलूँगा तेरे संग में।
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूँगा तेरे संग में।
रास रचेगा ब्रज में भारी, मुझे दिखाओ प्यारी॥ टेर॥

ओ मोरे भोले स्वामी कैसे ले जाऊँ तोहे संग में।
मोहन के सिवा वहाँ कोई पुरुष न जाये रास में।
हँसी करेगी ब्रज की नारी मानो बात हमारी॥ टेर॥

ऐसा बना दो मुझे जाने न कोई इस राज को।
मैं हूं सहेली तेरी ऐसा बताना ब्रजराज को।
लगा के बिन्दिया पहन के साड़ी, चाल चले मतवाली॥ टेर॥

हँस के सती ने कहा बलिहारी जाऊँ इस रूप पे।
एक दिन तुम्हारे लिये आये मुरारी इस रूप में।
मोहिनी रूप बनाया मुरारी, अब ये तुम्हारी बारी॥ टेर॥

देखा मोहन ने समझ गये वो सब बात रे।
ऐसो बजाई बंशी सुध बुध भूले भोलेनाथ रे।
सर से खिसक गई जब साड़ी—मुस्काये गिरधारी,
भोले शरमा गये है॥ टेर॥

दीन-दयालु तेरा तब से गोपेश्वर हुआ नाम रे।
ओ भोले बाबा तेरा बृन्दावन में बना धाम रे।
'ताराचन्द' कहे ओ त्रिपुरारी, रखियो लाज हमारी,
शरण तेरी आ गये है॥ टेर॥

॥ श्री ॥

"नमः कल्याण रूपाय दारूक बन वासिने,
नमः संकट नाशाय नागेशाय नमो नम"॥

॥ विनय ॥

भगवान तुम्हारे मन्दिर में मैं तुम्हें रिझाने आया हूँ।
वाणी में तनिक मीठास नहीं पर विनय सुनाने आया हूँ॥ १॥
प्रभु का चरणामृत लेने को है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आँखों के दोनों प्यालों में कुछ भीख मांगने आया हूँ॥ २॥
तुझ से लेकर क्या भेंट धरु, भगवान आपके चरणों में।
मैं भिक्षूक हूं तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आया हूँ॥ ३॥
सेवा की वस्तु नहीं कोई फिर मेरा हृदय देख लेना।
हाँ रोकर आज आँसूओं का मैं हार चढ़ाने आया हूं॥ ४॥

॥ भजन ॥

(तर्ज :—देखी मटकी पे मटकी कन्हैया)

चली काँवड़ियो की टोली, खाके भंगिया की गोली
कान्धे गंगाजल की काँवड़ उठाई रे
बोली हर-हर बम की लगाई रे......

भोले जी के धाम चले सभी संग-संग में
रंग गये सभी कोई भक्ति के रंग में
नाचे कोई गाये, ताली मिलकर बजाये हो आ ऽ ऽ ऽ
देखो जब से ये सावन ऋतु आई रे
बोली हर-हर बम की लगाई रे .....

पहने कोई पीले वस्त्र कोई लाल लाल है
दाढ़ी मूँछ मुँह पर बढ़ी, रुखे सूखे बाल है
बने बाबा के दीवाने, चले भोले को मनाने, हो ओ ऽ ऽ ऽ
देखो सुध बुध सब बिसराई रे
बोली हर-हर बम की लगाई रे......

आँधी आवे पानी आवे चाहे तपे घाम है
जपते मगन चले भोले जी के नाम है
जंगल होवे या पहाड़ी पाँव धरे ना पिछाड़ी ओ ऽ ऽ ऽ
चले बच्चे बूढ़े लोग लुगाई रे
बोली हर-हर बम की लगाई रे......

पहुंच कर बाबा धाम माटी पोते अंग में
स्वांग भोले जी का धर नाचे सब उमंग में
ताली हँस के बजाये, कोई नाचे कोई गाये हो ओ ऽ ऽ ऽ
देखो भक्तों का मन हरषाई रे
बोली हर-हर बम की लगाई रे.........

पाँव में फफोले पड़े उठे ना कदम है
कँकड़ी चुभे तो भक्त बोले बम-बम है
बाबा पार अब लगाओ, हाथ अपने बढ़ाओ ओ ऽ ऽ ऽ
लाज भक्तां को लियो अब बचाई रे
बोली हर-हर बम की लगाई रे........

॥ भजन ॥

मिलता है सचचा सुख केवल, भोलेनाथ तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल, क्षण-क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
चाहे बैरी कुल संसार बने, मेरे रोज सबेरे आने में।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान बाबा तेरे चरणों में॥
चाहे पावक में मुझे जलना हो चांहे कांटो पर मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान भोला तेरे चरणों में॥
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारो ओर अंधेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान बाबा तेरे चरणों में॥
जिह्वा पर तेरा नाम रहे तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
तेरी याद तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—हाय-हाय ये मजबूरी)

भोला भंग तुम्हारी, नित घोटत - घोटत हारी
मेरे दोनों हाथ दुखाये,
तेरी एक दिना की होय तो घोटूँ, रोज न घोटी जाये ॥

जां दिन से मैं ब्याह के आई, भाग्य हमारे फूटे,
राम करे ऐसा हो जाये, ये सिलबट्टा टूटे - ३
तेरी रोज-रोज की अकड़ रे मोड्या, घरमें राड़ मचाये ॥ टेर ॥

नाजुक तन को नाज से पाला, कैसे सहूँ कसाले,
भांग तुम्हारी घोटत-घोटत, हाथों में पड़ गये छाले - ३
तेरी रोज-रोज की अकड़ रे भोला, हमसे सहीं न जाये ॥ १ ॥

अलख पड़े तेरी सिलबट्ट पर, मैं मैके को जाऊँ,
जब तू पीना भंग छोड़ दे, तभी लौट कर आऊँ -४
मैं तो अपने चली मायके तभो समझ में आये ॥ २ ॥

सुण गणपत की महतारी नित घोटो भांग हमारी,
बिन भांग रहा न जाये ।
गौरा तुझको छोड़ दूँ, लेकिन भांग न छोड़ी जाये ॥ ३ ॥

क्रोध में आकर शिवशंकर ने, खोला अपना झोला,
एक चरस की गोली निकली, एक भांग का गोला - ३
गौराजी को दिखा - दिखा कर, भोला भोग लगाये ॥ ४ ॥

भंग नहीं भगवती है ये, शिवघट में बसने वाली,
दुष्ट दलन का बध करने को, बनी है ये कंकाली - ३
इसको पीकर ऋषि मुनि जी, शिव का ध्यान लगाये ॥ ५ ॥

शिवशंकर से कहे गवरजा, सुन लो अरज हमारी,
भर-भर प्याला पीयो सदा शिव, तुम जीते मैं हारी - ३
"शर्मा" तेरी भंग की महिमा, तुझको गाके सुनाये ॥ ६ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—राजा जानी ओ राजा)

जटा में तेरे गंगा विराजे, गल सर्पों की माला ।
ओ डमरू वाला, ओ डमरू वाला ॥ टेर ॥
तेरी महिमा कोई ना जानी, तूँ सबसे बड़ा है दानी ।
ओ कैलासी, ओ अविनाशी, तूँ है देव निराला ॥ डमरू ..... ॥
शिव हो बाघम्बर धारी, करते नन्दी की असवारी ।
ओ त्रिपुरारी भोले भण्डारी, तू सबका रखवाला ॥ डमरू...... ॥
कोई द्वार तुम्हारे आये तुमसे जो मांगे सो पाये ।
कोई सवाली जाये न खाली, सबको देने वाला ॥ डमरू...... ॥
भोले सुन लो अरज हमारी, हम आये शरण तिहारी ।
'ताराचन्द' भी निशदिन भोले, जपे तुम्हारी माला ॥ डमरू...... ॥

॥ भजन ॥

बानर बाँको रे लंका,नगरी में मच गयो हांको रे ॥ टेर ।

मात सिया यूँ बोली बेटा, फल खाई तूं पाको रे ।
इतने माहीं कूद्या हनुमत, मार फदाको रे ॥ १ ॥

रूंख उखाड़ पटक धरणी पर, भोग लगाय फलांको रे ।
रखवाला जब पकड़न लाग्या, दियो झड़ाको रे ॥ २ ॥

राक्षसिया अडरावे सारा, काल आग्यो म्हाँको रे ।
मुँह पर मार पड़े मुक्काँरी, फाड़े बांको रे ॥ ३ ।

हाथ टाँग सिर फोड़े; घट, फोड़े ज्यूँ पाको रे ।
उथल पुथल सब कर्‌यो बगीचो बिगाड़्यो खाको रे ॥ ४ ॥

उजड़ी पड़ी अशोक बाटिका, ज्यूं मारग सड़काँको रे ।
लूक-छिपकर कई घर में घुसग्या, पड़ गयो फाको रे ॥ ५ ॥

जाय पुकार करी रावण स्यूं, दिन खोटो असुरां को रे ।
कपी आय एक घुस्यो बाग में, जबर लड़ाको रे ॥ ६ ॥

भेज्यो अक्षयकुमार भिड़णने, हणुमत स्यामी झांक्यो रे ।
एक लात की पड़ी असुर पर, पी गयो नाको रे ॥ ७ ॥

धन धन रे रघुवर का प्यारा, अतुलित बल थाँको रे ।
तूँ ही जग में मुकुटमणी है, राम भगतां को रे ॥ ८ ॥

—०—

॥ भजन ॥

हे भूतेश्वर तेरे मन्दिर में, हम तुझे रिझाने आये हैं।
हम तुझे रिझाने आये हैं, हम तुझे मनाने आये हैं॥
फूलों की पुरिया, गंगा जल हम तुझे चढ़ाने आये हैं।
तेरी महिमा जग से न्यारी है, तू तीन लोक त्रिपुरारी हैं॥
तेरा गुण गाते नर नारी हैं, चरणों में शीश झुकाये हैं।
तेरे डमरू की धुन को सुनकर प्रभु काँप उठे दिकपाल हैं॥
तेरे गल मुण्डों की माला है, तेरी महिमा गाने आये हैं।
सारी सृष्टि के तुम रचैया हो, बृन्दावन रास रचैया हो॥
गोपेश्वर हो, तुम कन्हैया हो तुझे अपना बनाने आये हैं।
शिव शंकर हो अविनाशी हो, तुमहीं घट-घट के वासी हो॥
तुम काटो यम की फांसी हो तुम्हें दिल में बैठाने आये हैं।
तुम तन पे भस्मी रमाते हो, श्री रामका ध्यान लगाते हो॥
नित भाँग धतूरा खाते हो, तेरा दर्शन पाने आये हैं।
तुम बैद्यनाथ कहलाते हो, तुम बासुकोनाथ कहलाते हो॥
तुम विश्वनाथ कहलाते हो, हम प्रीत लगाने आये हैं।
शक्ति दो भक्ति का वर दो, और पाप सभी मेरे हर लो॥
झोली खुशियों से अब भर दो, यही अर्जी लगाने आये हैं।
हे भूतेश्वर तेरे मन्दिर में, हम तुझे रिझाने आये हैं॥

।। भजन ।।

(तर्ज—खाइके पान बनारस वाला…फिल्म—डाॅन)

पीकर भंग रहे मतवाला, ये कैसा है देव निराला
देता है हरदम बरदान गौरा हो गया मैं हैरान
ये तेरा डमरू बजाने वाला …. ॥ १ ॥……॥ टेर ॥
बोले ब्रह्मा जी अब मैं तो सकूँगा ना जी
झट भाग्य बदलता, जिसपे हो जाये यह राजी
ये भोला भण्डारी, पीता भांग मती है मारी
जितने में खुश हो जाए, जाने है दुनियां सारी
ऐसे होता है मेरा अपमान, कैसे दानी से पड़ गया पाला
ये तेरा डमरू बजाने वाला ॥ २ ॥……पीकर भंग……
सुन बात भवानी, करे तेरा स्वामी मनमानी
यह आदत इनकी अब पड़ेगी तुमको छुड़ानी
हम इनसे घबड़ाए, और ना इनको समझाए,
जो भी बात कहे हमसे ये हाँ हाँ कहते जाए
अब कैसे चलेगा विधान, एक दिन होगा गड़बड़ घोटाला
ये तेरा डमरू बजाने वाला ॥ ३ ॥……पीकर भंग……
सुन ब्रह्मा जी की बातें, शिव मन ही मन मुस्काये
बोली पार्वती जी, ब्रह्मा कैसी बात बनाते
सचमुच भोले-भाले ये हैं भक्तों के रखवाले
इसीलिए अमृत ना दे तुम इन्हें जहर दे डाले
उस समय का करो कुछ ध्यान, कौन पीता जहर का प्याला
ये मेरा डमरू बजाने वाला ॥ ४ ॥……पीकर भंग……

बोले त्रिपुरारी, सुनो ब्रह्माजी बात हमारी
काहे भांग बनाई, ये तो है भूल तुम्हारी
अब जो भी हो जाये, पर ये छोड़ो ना जाए
"भक्त" भजन करे शम्भु का तो भव से तर जाए
"काँवड़ संघ" करे गुणगान, बाबा भोला है दीन दयाला
ये तेरा डमरू बजाने वाला ॥ ५ ॥······पीकर भंग······

॥ भजन ॥

(तर्ज—कही दीप जले फिल्म—बीस साल बाद)

हरि ॐ नमः शिवाय, हरि ॐ नमः शिवाय हरि ॐ
तेरी जटा में गंग विराजे, माथे पे चन्दा साजे
और डम डम डमरू बजाये ॥ १ ॥······हरि ॐ
तेरी लीला है सबसे न्यारी, जिसे जाने दुनिया सारी
तेरी महिमा बरनी न जाये ॥ २ ॥······हरि ॐ
ओं अंग विभूति रमाये, नित भांग धतूरा खाये
श्री राम का ध्यान लगाये ॥ ३ ॥······हरि ॐ
ये माटी का तन तेरा क्यों करता तेरा मेरा
माटी माटी में मिल जाये ॥ ४ ॥······हरि ॐ
ये जग है मुसाफिरखाना लगा रहता है आना जाना
क्यों इससे नेह लगाये ॥ ५ ॥······हरि ॐ
ये भक्त तेरा गुण गाये, तेरे चरणों में शीश नवाये
गुनगाण करे चित लाये ॥ ६ ॥······हरि ॐ

॥ भजन ॥

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥ टेर ॥
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप··· ॥ १ ॥

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहें।
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों, करतार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप····· ॥ २ ॥

यदि मानव का मुझे जन्म मिलें, तो तेरे चरणों का मैं पुजारी बनूँ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप·········· ॥ ३ ॥

यह जीत हार सब तेरी है, मेरा इस में कुछ भी है नहीं।
मैं जैसा भी हूँ, प्रभु तेरा हूँ, उपचार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप······ ॥ ४ ॥

जब-जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ निराकार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप······· ॥ ५ ॥

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ, तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप········ ॥ ६ ॥

अरे मुसाफिर ! जाग, उठ, देख, सावधान हो !

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है वो पावत है ॥ उठ०

टक नींद से अखियां खोल जरा,
ओ गाफिल ! प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करण की रीत नहीं,
प्रभु जागत है तू सोवत है ॥ उठ०

नादान भुगत करनी अपनी,
ओ पापी पाप में चैन कहां।
जब पाप की गठरी शीश धरी,
फिर सिर पकड़ क्यों रोवत है ॥ उठ०

जो कल करना सो आज कर ले,
जो आज करना सो अब कर ले।
जब चिड़ियन ने चुन खेत लिया,
फिर पछताये क्या होवत है ॥ उठ०

卐

जिन्दगी जब तक रहेगी, फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम कर लो राम से ॥

कैसा बनकर हमें गोविन्द भगवान का भजन, करना चाहिए।

कृष्ण ! गोविन्द ! गोपाल ! गाते चलो,
मन को विषयों के विष से हटाते चलो।

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें,
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगें,
अपने रथ को सुमारग चलाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

प्राण जावें मगर नाम भूलो नहीं,
दुःख में तड़फो नहीं सुख में फूलो नहीं,
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

नाम जपते रहो काम करते रहो,
पाप की वासनाओं से डरते रहो,
प्रेम भक्ति के आँसू बहाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

ख्याल आयेगा उसको कभी न कभी,
भक्त पायेगा उसको कभी ना कभी,
ऐसा विश्वास मन में जमाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

卐

गोविन्द ज़य जय गोपाल ज़ुय जय।
श्री राधारमण हरि गोविन्द जय जय॥

॥ भजन ॥

जय जय हरि हर गौरीशंकर ईश्वर दीन दयाला है।
राम नाम में समय बिताना, सच्चा कर्म हमारा है।
हरि भजन में चित्त लगाना सच्चा धर्म हमारा है।
सुबह शाम दिन रात रटे तो, हो कल्याण हमारा है।
कैलाशी काशी के वासी, भोला डमरू वाला है।
जटा जूट में गंग विराजे, अर्ध चन्द्रमा न्यारा है।
गले बीच लिपटे हैं विषधर, कान कुण्डल वाला है।
नाव पड़ी मझधार बीच में, दीखत नहीं किनारा है।
भोलानाथ महेश्वर शम्मु पार लगाने वाला है।
अलख निरंजन भव दु ख भंजन भक्तों का प्रतिपाला है।
जो ध्यावे इच्छा फल पावे पल में करत निहाला है।
आंख खोलकर देखरे मनवा जग में कौन हमारा है।
भजन किये भव बन्धन टूटे छूटे सब संसारा है।
जय-जय हरि हर गौरीशंकर ईश्वर दीन दयाला है।

●

हरि ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।
हरदम जपते रहो हरि ॐ नमः शिवाय॥

।। भजन ।।

(तर्ज :—मन डोले मेरा तन डोले)

इठलाती हुई, बलखाती हुई, चलो पनियाँ भरण शिवनार रे,
सागर पर उतारो गागरिया ॥ टेर ॥

रूप देख सागर ने पूछा, कौन पिता महतारी,
कौन गाँव की रहने वाली, कौन पुरुष को नारी ॥ गवरजा ॥
हौले हौले गौरां बोले छाया है रूप अपार रे ॥ सागर० ॥

राजा हिमाचल पिता हमारे, मैनावती महतारी।
शिवशंकर हैं पति हमारे मैं हूँ उनकी नारी ॥ समुन्दर ॥
जल ले जाऊँ पिव नहलाऊँ, तू सुनलै वचन हमार रे ॥ सागर० ॥

कहे समुन्दर छोड़ भोले को, घर-घर अलख जगाये।
चौदह रतन भरे हैं मुझ में, बैठी मोज उड़ाये ॥ गवरजा ॥
वो पीवे भंगिया वो हैं नौरंगिया, क्यों सहती कष्ट अपार रे
॥ सागर० ॥

क्रोधित होकर चली गौरजा, पास भोले के आई।
आपके होते तके समुन्दर, सारी कथा सुनाई ॥ गवरजा ॥
शिव कियो जतन, सागर को मंथन लिया चौदह रतन
निकाल रे ॥ सागर० ॥

॥ भजन ॥

दोहा—किसी को माल देता है, किसी को लाल देता है।
कोई ये कह नहीं सकता, कि बाबा टाल देता है।

भोले शंकर बाबा तेरी याद सताये,
याद सताये मन नीन्द न आवे रे-२। भोले शंकर……
एक तो बाबा तेरी याद सताये,
दूजी दुनियाँ ज्ञान बताये,
ज्ञान बताये पर मन नहीं भाये रे-२। भोले शंकर……
सावन में तो बाबा थारे मेलो लाग भारी,
कांवड़ लेकर थार आवे लाखों नरनारी
गंगाजल ओर फूल बाबा थारे तो चढ़ाव रे। भोले शंकर……
जो कोई बाबा जी भजन सुनावे,
मन इच्छा फल वो पा जावे।
जोही जैसा भाव लाव वैसा ही फल पावे। भोले शंकर……

॥ भजन ॥

ओ बाबा मतना लोग हँसाओ रे।
हाथ जोड़कर करूँ विनती बेगा आवो रे॥
आणो है तो आ मेरे बाबा, मत नां देर लगाओ।
थारे भरोसे बैठे रे बाबा, चरणा में ध्यान लगायो॥
ओ लज्या राख नहीं तो, जाव रे॥
हाथ जोड़……

कहने में कोई सार नहीं है,
तू जाणे सब के मन की.
थार नाम की देव दुहाई बात कर मतलब की,
बान शर्म लाज नहीं आव रे,
हाथ जोड़ ......

दोहा—शिव शिव सदा रटते रहो, जब तक घट में प्राण।
कबहुं तो भोले भण्डारी के, भनक पड़ेगी कान ॥

卐

॥ भजन ॥

(तर्ज—रेशमी सलवार)

लुटा दिया भण्डार, झुँझनू वाली ने।
कर दिया माला माल, झुँझनू वाली ने।
जैसी जो भावना लाया, वैसा ही वो फल पाया।
नहीं खाली उसे लौटाया, वो मन ही मन हर्षाया॥
कर दिया उसको निहाल, झुँझनू वाली ने॥ १ ॥
जो लगन लगाया सच्ची, है उसकी नाव ना अटकी
बेड़े को पार लगाया, नहीं देर करी वो पल की॥
मिटा दिया जंजाल, झुँझनू वाली ने॥ २ ॥
चरणों की किया जो सेवा, वो पाया मिश्री मेवा।
जिसने है मांगा बेटा, वो चाँद सा टुकड़ा पाया।
कर दिया सबको निहाल, झुँझनू वाली ने॥ ३ ॥
जिसने शृँगार सजाया, वो माँ का दर्शन पाया।
वो मन ही मन हर्षाया, नैनों में रूप समाया॥
दिया है जन्म सुधार, झूँझनू वाली ने॥ ४ ॥

॥ शिव यशोदा का जवाब ॥

शिव आये यशोदा के द्वार मात मोहें दर्शन करा,
मेरा सोया हुआ है गोपाल, बाबा ले भिक्षा जा ॥ टेर ॥

कैलाश पर्वत से आया मैं माता,
तेरे घर में जन्मा है जग का विधाता,
विनती करूँ बार बार - मात मोहे दर्शन करा ॥ १ ॥

बाबा तेरे गले में है सर्पों की माला
जिसे देख डर जायेगा मेरा लाला,
हठ ना करो बार-बार बाबा ले भिक्षा जा ॥ २ ॥

डरता है जिससे जगत माँ ये सारा,
उसको डराऊंगा मैं क्या विचारा,
महिमा बड़ी है अपार मात मोहे दर्शन करा ॥ ३ ॥

बड़े भाग्य से यह दिन मेरे घर में आया
बीतो उमरिया में बेटा जो पाया,
वन्दन करूं बार बार बाबा ले भिक्षा जा ॥ ४ ॥

बेटा समझती है जिसको तू माता
वो तो है सारे जगत का विधाता,
अरचन करूं बार बार—मात मोहे दर्शन करा ॥ ५ ॥

डरती हुई माता अन्दर को धाई,
गोदी में अपने कन्हैया को लाई,
देवों ने की जय-जयकार, मात हमें दर्शन करा ॥ ६ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—जरा सामने तो आवो छलिये ···)

जगदम्बे भवानी मैया ! तेरा त्रिभुवन में छाया राज है।
सोहे वेष कसुमल टीको, तेरे रत्नों का सिर पे ताज है ॥ टेर ॥

जब-जब भीड़ पड़ो भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे।
अधम उद्धारण तारण मैया, युग-युग रूप अनेक धरे ॥
सिद्ध करती तूँ भक्तों के काज है, नाम तेरो गरीब निवाज है।
सोहे वेष कसुमल···

जल पर थल और थल पर सृष्टि, अद्भुत थारी माया है।
सुर नर मुनि जन ध्यान धरे नित, पार नहीं कोई पाया है ॥
थारे हाथोंमें सेवक की लाज है, लियो शरणो तिहारो मैया आज है
सोहे वेष कसुमल···

जरा सामने तो आवो मैया, छुप-छुप छलने में क्या राज है।
यूँ छुप ना सकोगी मेरी मैया, मेरी आत्मा की ये आवाज है ॥
मैं तुमको बुलाऊँ तुम नहीं आओ, ऐसा कभी ना हो सकता।
बालक अपनी मैया से बिछुड़ कर, सुख से कभी ना सो सकता ॥
मेरी नैया पड़ो मंझधार है, अब तू ही तो खेवनहार है।
आजा रो-रो पुकारे मेरी आत्मा, मेरी आत्मा की ये आवाज है ॥
जगदम्बे भवानी मैया···

॥ भजन ॥

(नरसिहजी की पुकार)

ओजी औ गिरधारी नटवर नागरिया।
थारी नानी बाई री भात भरणन आज्यो जी साँवरा ॥ १ ॥
नरसी मेहता न तो थारो आसरो।
म्हारी आज सभा में लाज बचावण आज्यो जी साँवरा ॥ २ ॥
कद से उबो जोवे थारी बाटड़ली।
थारी नानी बाई ने चुनड़ उढ़ावण आज्यो जी साँवरा ॥ ३ ॥
दीनानाथ दयालु थारो नाम है।
म्हारी अटकी नैया पार लगावण आज्यो जी साँवरा ॥ ४ ॥
थारे ही भरोसे मे तो सांवरियाँ।
थारे भगतारो मान बढ़ावण बेगा आज्यो जी साँवरा ॥ ५ ॥
थारे बिना म्हारी कुण सुनेगो।
भोले भगतारी बात निभावन आज्यो जी साँवरा ॥ ६ ॥
भूल चूक "भक्ता" की सारी मांफ करो।
म्हें टाबर भोला भाला दिल न दूखावों जी साँवरा ॥ ७ ॥
"ताराचन्द" थासु सांवरा अरज करे।
थारे भक्ता ने दरश दिखावण आज्यो जी साँवरा ॥ ८ ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे।
हे नाथ नारायण बासुदेव ॥

॥ भजन ॥

मेरी पड़ी रे भँवर बिच नैया, मैया तार देना ॥ टेर ॥
मैया चण्डी-चण्डी-चण्डी, थारे शिखर पे सोहे झण्डी ।
ओ चण्डी तार देना, ओ चण्डी तार देना ॥ टेर ॥
मैया, ज्वाला-ज्वाला-ज्वाला, तेरे पास खड़ा नन्दलाला ।
कर दे दुश्मन का मुँह काला, ओ ज्वाला तार देना ।
ओ ज्वाला तार देना ॥ टेर ॥
मैया काली-काली-काली, मैया है कलकत्ते वाली ।
थारा वचन जाय ना खाली, करती भगतां की रखवाली ।
ओ काली तार देना, ओ काली तार देना ॥ टेर ॥
मैया सब सेवक गुण गावे, थारे चरणां शीश नवावे ।
थारो झुंझनु नगर बसावे, ओ मैया तार देना ।
ओ दादी तार देना ॥ टेर ॥

॥ भजन ॥

दुर्गा भवानी आई रे, देवी दुर्गा,
आई सिंह पे सवार, छाया तेज बेसुमार,
माँ खुशियाँ हजारों लाई रे ॥ देवी दुर्गा० ॥
तू ही ने महिषासुर मारा, मधुकैटव को तूने पछाड़ा,
पहने मुण्डों की माला, क्रोध की भड़के ज्वाला,
रुप अनोखा पाई रे ॥ देवी दुर्गा० ॥
देवों के दुःखों को टारे, शुम्भ निशुम्भ दनुज संघारे,
तेरी ना शानी है, दुनिया ने मानी है,
महिमा सभी ने गाई रे ॥ देवी दुर्गा० ॥

जो कोई द्वार तुम्हारे आया, मुँह मांगा सबही ने पाया,
पल में भण्डार भरदे, तू जो चाहे वो करदे,
पर्वत को भी राई रे ॥ देवी दुर्गा० ॥

तुम ही हो माँ जग की जननी, 'राजू' आस लगी चरणन की,
दुःखों ने घेरा है, जीवन ये मेरा है,
दिल में उदासी छाई रे ॥ देवी दुर्गा० ॥

卐

॥ भजन ॥

भोले बाबा की मस्ती निराली, हर दिलों को नचा देने वाली
त्रिपुरारी कहूं, कष्ट हारी कहूं, चन्द्रशेखर कहूं, गंगधारी कहूं
कोई दर से गया नहीं खाली, हर दिलों .....
दिगम्बर कहूं, त्रिलोचन कहूं, बासुकीनाथ कहूं, तारकेश्वर कहूं
धूल मैंने चरणों की लगा ली, हर दिलों .....
मृत्युञ्जय कहूं, वियोगी कहूं, औलिया मस्त कहूं, कर्मयोगी कहूं
आया दर पे तुम्हारे सवाली, हर दिलों......
नीलकंठ कहूं, एकलिंग कहूं, त्र्यम्बकेश्वर कहूं,
क्या महाकाल शिव बम्ब सुरेश्वर कहूं,
तूने तन पर विभूति रमा ली, हर दिलों .....
जटाधारी कहूं, विचारी कहूं, अपनी बीती हुई पीड़ सारी
मैंने शिव की मनौती मना ली, हर दिलों......

★

॥ शिव चालीसा ॥

दोहा—जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
भणत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफणी के॥
अंग गौर, शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे॥
मैना मातु की बड़ी दुलारी। बाम अङ्ग सोहत छवि न्यारी।
कर त्रिशूल बाघम्बर धारी। रहत सदा शत्रु क्षयकारी॥
नन्दीगण सोहत हैं कैसे। सागर मध्य कमल हों जैसे॥
कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जातन काऊ॥
देवन जब-जब जाय पुकारा। तब-तब दुःख प्रभु आय निवारा॥
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी॥
तुरत षड़ानन आप पठायऊ। लव निमेष मंह मारि गिरायऊ॥
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा करि लीन बचाई॥
किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरि प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं। सेवक अस्तुति करत सदाहीं॥
वेद नाम महिमा तब गाई। अकथ अनादि भेद नहीं पाई॥
प्रगटेउ दधिमाथन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये बिहाला॥

कीन्ह दया तंह करी सहाई । नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा । जीत के लंका विभीषण दीन्हा ॥
सहस कमल में हों रहे धारी । लीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥
एक कमल प्रभु राखेंऊ जोई । कुशल नैन पूजन चह सोई ॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर । भए प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥
जय जय जय अनंत अविनाशी । करत कृपा सबके घटवासी ॥
दुष्ट सकल नित मोहिं सतावै । भ्रमर रहे मोहि चैन न आवै ॥
त्राहि - त्राहि मैं नाथ पुकारो । यहि अवसर मोहि आन ऊबारो ॥
ले त्रिशूल शत्रुन संहारो । संकट से प्रभुआन ऊबारो ॥
माता - पिता भ्राता सब होई । संकट में पूछत नहिं कोई ॥
स्वामी एक है आश तुम्हारी । आय हरहु अब संकट भारी ॥
धन निर्धन को देत सदा ही । जो कोई जाचै वो फल पाही ॥
अस्तुति केहि बिधि करौं तुम्हारी । क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥
शङ्कर हो सङ्कट के नाशन । विघ्न - विनाशन - मङ्गल-कारन ॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावै । नारद शारद शीश नवावै ॥
नमो नमो जय नमो शिवाय । सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥
जो यह पाठ करै मन लाई । तापर होत हैं शम्भु सहाई ॥
ऋनियाँ जो कोई हो अधिकारी । पाठ करै सो पावन हारी ॥
पुत्र होन पर इच्छा कोई । निश्चय शिव प्रसाद तोहि होई ॥
पण्डित त्रयोदशी को लावैं । ध्यान पूर्वक होम करावै ॥
त्रयोदशी ब्रत करै हमेशा । तन नहिं ताके रहे कलेशा ॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै । शंकर सन्मुख पाठ सुनावै ॥

जन्म-जन्म के पाप नसावै। अन्तवास शिवपुर में पावै॥
कहे 'अयोध्या' आश तुम्हारी। जाति सकल दुःख हरहुं हमारी॥

दोहा नित्य नेम करि प्रातः हि, पाठ करे चालीस।
तुम ताकि मन-कामना, पूर्ण करहुं जगदीश॥
मंगसर छवि हेमन्त ऋतु, संवत् चौसठ आन।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन्ह कल्याण॥

॥ अथ शिवनामावलिः ॥

ॐ महादेव शिव शङ्कर शम्भो उमाकान्त हर त्रिपुरारे।
मृत्युंजय वृषमध्वज शूलिन् गङ्गाधर मृड मदनारे॥
हरशिव शङ्कर गौरीशं वन्दे गङ्गाधर मीशम्।
रूदं पशुपतिमीशानं कलये काशीपुरिनाथम्॥
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो।
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो॥
शिव शिवेति शिवेति वा हर हरेति हरेति वा।
भव भवेति भवेति वा मृड मृडेति मृडेति वा॥
भज मनः शिवमेव निरन्तरम्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

卐

॥ शिवरामाष्टक ॥

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो, त्रिविधतापनिवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ १ ॥
कमल लोचन राम दयानिधे, हर गुरो गज रक्षक गोपते।
शिवतनो भव शंकर पाहि मां, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ २ ॥
स्वजन रंजन मंगल मन्दिर, भजति ते पुषः परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ ३ ॥
जय युधिष्ठिर बल्लभ भुपते, जय जयार्जित पुण्य पयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तुते, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ ४ ॥
भवविमोचन माधव मापते, सुकवि मानस हंस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्ष माम्, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ ५ ॥
अवनि मण्डल मंगलमापते, जलद सुन्दर राम रमापते।
निगम कीर्तिगणार्णव गोपते, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ ६ ॥
पतित पावन नाममयी लता, तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे, शिव हरे विजयं करु में वरम् ॥ ७ ॥
अमरतापर देव रमापते, विजयतस्यव नाम घनोपमा।
मयि कथं करुणार्णव जायते, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ ८ ॥
हनुमतः प्रियतोषकर प्रभो, सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ ९ ॥
नर हरे रति रंजन सुन्दरं, पठति यः शिवराम कृतंस्तवम्।
बसति रामरमा चरणाम्बुजे, शिव हरे विजयं कुरु में वरम् ॥ १० ॥

प्रातरुत्थाय न्यो भक्त्या, पठेदेकाग्रमानसः।
विजयो जायते तस्य, विष्णु सान्निध्यमाप्नुयात् ॥

श्री शिवताण्डव स्तोत्रम्

जटाकटाह - संभ्रम - भ्रमन्निलिंप - निर्झरी
विलोल वीचिवल्लरी विराजमान मूर्धनि ।
धगद्धगद्ध - धगज्ज्वलल् - ललाटपट्ट - पावके
किशोर - चन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ १ ॥

धरा - धरेन्द्र - नन्दिनी - विलासबन्धु - बन्धुर —
स्फुरद्ध - दिगन्त - सन्तति - प्रमोदमानमानसे ।
कृपा - कटाक्ष - घोरणी - निरुद्ध - दुर्धरापदि—
क्वचिच्चिदम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ २ ॥

जटा - भुजङ्ग - पिङ्गल - स्फुरत्फणा - मणिप्रभा-
कदम्ब - कुँकुमद्रव - प्रलिप्त - दिग्वधूमुखे ।
मदान्ध - सिन्धुरस्फुरत् त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ३ ॥

सहस्र - लोचन - प्रभृत्यशेष - लेष शेखरः
प्रसूनधूलिघोरणी - विधूसरांघ्रि - पीठभूः ।
भुजङ्ग - राज - मालयानिबद्ध - जाट - जूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोर - बन्धु-शेखरः ॥ ४ ॥

ललाट - चत्वर - ज्वलधनञ्जय - स्फुलिङ्गभा
निपीत - पञ्च - सायकं नमन्निलिंप - नायकम् ।

सुधा - मयूख - लेखया विराजमान - शेखरम्
महाकपालि-सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥ ५ ॥

कराल - भाल - पट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वल—
द्धनञ्जयाधरीकृत - प्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्र - नन्दिनी - कुचाग्र - चित्र - पत्रक—
प्रकल्पनैक - शिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥ ६ ॥

नवीनमेघमण्डली - निरुद्ध - दुर्धरस्फुरत्—
कुहू - निशीथिनी - तमः प्रबन्ध - बन्धुकन्धरः ।
निलिंप - निर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कला - निधान - बन्धुरः श्रियं जगद्रु - धुरंधर ॥ ७ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कज - प्रपञ्चकालिमच्छटा—
विडम्बिकण्ठकन्धरा - रुचिप्रबन्ध - कन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ८ ॥

अगर्व - सर्वमङ्गला - कलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरी - विजृंभणा - मधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकांधकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ ९ ॥

जयत्वदभ्रविभ्रम - भ्रमद्भुजङ्गमस्फुर—
द्धगद्धगद्विनिर्गमत् - करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन् मृदङ्गतुङ्ग मङ्गल—
ध्वनिक्रमप्रवर्तित - प्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ १० ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो—
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्- विपक्ष - पक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन् मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ ११ ॥

कदा निलिम्प - निर्झरी - निकुञ्ज - कोटरे वसन्
विमुक्त - दुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्त - लोल - लोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेतिमन्त्रमुच्चरन् कदासुखी भवाम्यहम् ॥ १२ ॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम् ॥ १३ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥

॥ अथ रुद्राष्टकम् ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजंनिर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाश-वासं भजेऽहं॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पारं नतो हं॥
तुषाराद्रिसंकाश-गौरं गभीरं, मनोभूत कोटि प्रभाश्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा, लसद्भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा॥
चलत्कुण्डलं शुभनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥
प्रचण्डं प्रकृष्ट प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपति भावगम्यं॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥
न यावद्ध उमानाथ पादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणां।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजा, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं।
जराजन्मदुःखौधतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदती॥

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।

॥ ॐ ॥

॥ अष्टादशश्लोकी गीता ॥

॥ अर्जुन उवाच ॥

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ २ ॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचार स उच्यते ॥ ३ ॥
श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ४ ॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिमुनिर्मोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ ५ ॥
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ ६ ॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥ ७ ॥
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो विदुः ॥ ८ ॥
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ ९ ॥

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १० ॥
मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ११ ॥
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२ ॥
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ १३ ॥
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ १४ ॥
निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढा पदमव्ययं तत् ॥ १५ ॥
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥ १६ ॥
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत् तपो मानसमुच्यते ॥ १७ ॥
सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ १८ ॥
गीतासारमिदं पुण्यं यः पठेत्सुसमाहितः ।
विष्णुलोकमवाप्नोति भयशोकविनाशनम् ॥ १९ ॥
॥ इति श्रीवेदव्यासविरचिताऽष्टादशश्लोकी गीता समाप्तम् ॥
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ श्री हनुमते नमः ॥

॥ श्री हनुमान चालीसा ॥

—o—

दोहा

श्रीगुरु चरण सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुवर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि,
हरहु कलेश विकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन वरन विराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे। काँधे मूँज जनेऊ साजे॥

शंकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग वंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचंद्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुवीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना । लंकेस्वर भय सब जग ज़ाना ॥
युग सहस्र योजन पर भानू । लीन्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी शरणा । तुम रच्छक काहू को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै । महावीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत वीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों युग परताप तुम्हारा । है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस वर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अन्त काल रघुवर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो शत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ इति ॥

॥ सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

॥ पवनसुत हनुमानकी जय ॥

॥ बोलो भाई सब सन्तन की जय ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द् छन्द्

बाल समय रवि भक्षि लियो तब तीनहुं लोक भयो अन्धियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो॥
देवन आनि करी विनती तब छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो १॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि श्राप दियो तब चाहिय कौन विचार विचारो॥
के द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के शोक निवारो॥को०-२॥

अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो॥
हरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो॥को०-३॥

रावण त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय अशोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो॥को०-४॥

वाण लग्यो उर लक्ष्मन के तब प्राण तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लक्ष्मन के तुम प्राण उबारो॥को०-५॥

रावण युद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमानि जुं बंधन काटि सुत्रास निवारो॥को०-६॥

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पाताल सिघारो।
देबिहिं पूजि भली विधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावण सैन्य समेत सँहारो॥को०-७॥
काज किये बड़ देवन के तुम वीर महाप्रभु देखि विचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कुछ संकट होय हमारो॥को०-८॥

दोहा—लाल देह लालो लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय यम कपि सूर॥

॥ इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

श्रीहनुमानजीकी आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥ टेक॥
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झाँकै॥ १॥
अञ्जनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥ २॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जाय सीया सुधि लाये॥ ३॥
लंका सो कोट समुद्र सी-खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥ ४॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजीके काज सँवारे॥ ५॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्राण उबारे॥ ६॥
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥ ७॥
बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥ ८॥
सुर नर मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे॥ ९॥
कंचन थाल कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥ १०॥
जो हनुमान जी की आरतो गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥ ११॥
लंका विध्वंस किये बलदाई। तुलसी स्वामी कीरति गाई॥ १२॥

॥ बोलो बजरंगबली की जय॥

श्रीहनुमत् स्तवन

सो०—प्रनवउँ पवनकुमार खल वन पावक ग्यानधन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरज सुन्दरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ - नंदनं॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर - चाप - धर, संग्राम-जित-खरदूषणं॥

इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं॥

मनु जाहिं राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

सोहा—जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

॥ बोलो सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

श्रीरामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषण वनमाला नयन विशाला सोभासिंधु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
माया गुन ग्याना तोत अमाना वेद पुराण भनंता॥
करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥
व्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपवासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसकाना चरित बहुत विधि कीन्ह कहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजे शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जो गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

दोहा—विप्रधेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज ईच्छा निर्मित तनु, माया गुण गोपार॥

॥ बोलो सियावर रामचन्द्रकी जय॥

卐

॥ भजन ॥

धन्य धन्य भोलानाथ बाट दिए, तीनों लोक पल भर में ।
ऐसो दीन दयाल मेरे शम्भु भरो खजाना पल भर में ।
प्रथम वेद तो ब्रह्मा को दे दिया बने वेद के अधिकारी ।
विष्णु को दिया चक्र सुदर्शन, लक्ष्मी सी सुन्दर नारी ॥
ईन्द्र को दिया कामधेनु, और ऐरावत सा बलकारी ।
कुवेर को कर दिया आपने, सारो सम्पत्ति का अधिकारी ॥
अपने पास पात्र नहीं रखा, मग्न रहे बाघम्बर में ।
ऐसे दीन दयाल मेरे ... ...

अमृत तो देवताओ को दे दिया आप हलाहल पान किया ।
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसीको, जिसने शिव तेरा ध्यान किया ॥
भागीरथ को दे दी गंगा, सब जगने स्नान किया ।
बड़े बड़े पापियों को तारा, पल भर में कल्याण किया ॥
आप नशे में मस्त रहो, पियो भंग नित खप्पर में ।
ऐसे दीन दयाल मेरे ... ...

लंका तो रावण को दे दी, बीस भुजा दस शीश दिए ।
रामचन्द्र को धनुष बाण और हनुमत को जगदीश दिए ॥
मन मोहन को दे दी मोहिनी, और मुकुट बख्शीश दिए ।
मुक्त हुए काशो के वासी, भक्ति में जगदीश दिए ॥
आप नशे में मस्त रहो, पियो भंग नित खप्पर में ।
ऐसे दीन दयाल मेरे ... ...

वीणा तो नारद को दे दी, हरि भजन को राज दिया ।
ब्राह्मण को कर्म काण्ड और सन्यासी को त्याग दिया ॥
जिस पर तुमरी कृपा भई, उसी को अनजन राज दिया ।
जिसने ध्याया उसीने पाया, महादेव तेरे वर में,
आप नशे में मस्त रहो, पियो भंग नित खप्पर में ।
ऐसो दीन दयाल मेरे ... ...

॥ भजन ॥

तर्ज आ गया २ हलुआ वाला

जायेंगे-जायेंगे सावन में बाबाधाम जायेंगे।
काँवड़ लेकर जायेंगे धूम मचाते मेले में जायेंगे॥
सावन मेला, लगता भारी, सारे हिल मिलकर नर नारी।
सावन एक वर्ष पर आता मन यह सोच सोच हर्षाता॥
सारे रस्ते में झूमेंगे नाचेंगे गायेंगे जायेंगे॥ १ ॥

अब तो कुछ ना अच्छा लगता हर पल मनवां यही रटता।
सावन कैसे भी आ जायें बाबा का हुक्म हो जाये॥
काँवड़ की लहर मन में छा जायेगी जायेंगे :—॥ २ ॥
काँवड़ियों की भोड़ मची है सबके मन में यहो जँची है॥
बाबा पर है काँवड़ चढ़ानी मन्दिर में है धोक लगानो।
बाबा का दर्शन पायेंगे! जायेंगे ॥ ३ ॥
'बोल बम्' भक्तों की है बोली गाती भक्त बृन्दों की टोली।
कांवड़ियों की है रमझोली, सारी नगरी संग में होली॥
बौल बम् की धुन रटते-रटते जायेंगे॥ ४ ॥
प्रेम से बोलो जय बाबा को प्यार से बोलो जय बाबा की
सब मिल बोलो जय बाबा की बोलो बोलो जय बाबा की

दोहा—शिव शक्ति महान है, जग के पालन हार।
बीच भंवर में अटकी नैया, पल में बेड़ा पार॥

श्रीरामवन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं
सीतासमारोपितवामभागम् ॥
पाणौ महासायकचारुचापं ।
नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

❀ कीर्तन ❀

श्री राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है ॥ टेक ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजन्ती माला ।
कोई कहे वसुदेव को नन्दन, कोई कहे नन्दलाला ॥
जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया, मुरली मधुर बजावे ।
ग्वाल बाल के संग में कान्हा, माखन मिश्री खावे ॥
अर्जुन का रथ तुमने हाँका, भारत भई लड़ाई ।
नाम को लेकर विष को पी गई, देखो मीराबाई ॥
जल में गज को ग्राह ने घेरा, जल में चक्र चलाया ।
जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पे, नंगे पावों आया ॥
अजामील को अन्त समय में, तेरा नाम जब आया ।
यमदूतों से मुक्त कराके, अपने धाम पठाया ॥
नरसी के सब काज सुधारे, मुझ को मत विसरावे ।
जन्म जन्म का तेरा सारंग तेरा ही गुण गावे ॥

॥ आरती शिवजी की ॥

॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव सबके स्वामी।
अविकारी, अविनाशी, अज अन्तरयामी ॥ ॐ ॥

आदि, अनन्त अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल अघहारी ॥ ॐ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तुम त्रिमूर्ति धारी।
कर्त्ता, धर्त्ता, भर्त्ता, तुम ही संहारी ॥ ॐ ॥

रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढर दानी।
साक्षी, परम अकर्त्ता, कर्त्ता अभिमानी ॥ ॐ ॥

मणिमय-भवन-निवासी, अति भोगी रोगी।
नित्य-श्मशान-बिहारो, योगी बैरागी ॥ ॐ ॥

छाल-कपाल-गरल-गल, मुण्डमाला काली।
चिता भस्म तन, त्रिनयन, अयन महाकाली ॥ ॐ ॥
प्रेत-पिशाच- सुसेवित पीत जटाधारी।
विवसन विकट रूपधर, रुद्र प्रलयकारी ॥ ॐ ॥
शुभ्र, सौम्य, सुरसरि धर, शशिधर, सुखकारी।
अति कमनीय, शांतिकर, शिव मुनि-मन हारी ॥ ॐ ॥
निर्गुण, सगुण, निरञ्जन, जगमय नित्य प्रभो।
कालरूप, केवलहर, कांलातित विभो ॥ ॐ ॥
सत्-चित्-आनन्द, रसमय, करुणामय, धाता।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व भाता ॥ ॐ ॥
हम अतिदीन, दयामय चरण शरण दीजे।
सब विधि निर्मल मतिकर, अपना कर लीजे ॥ ॐ ॥

॥ पुष्पांजलि ॥

हे रामः पुरुषोत्तमः नरहरे, नारायणं केशवं।
गोविन्दं गरुड़ध्वजं गुणनिधे दामोदरं माधवं।
हे कृष्ण, कमलापते, यदुपते सीतापते श्रीपते।
बैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मोपते पाहिमाम्॥
आदौ राम तपोवनादि गमनम् हत्वा मृगं काँचनम्।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाशणम्।
बालि निग्रहणं समुद्रतरणं, लंकापुरी दाहनम्।
पश्चाद्रावण कुम्भकरण हननं एतद्धि रामायणम्॥
आदौ देवकीदेव गर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम्।
मायापूतन जीवतापहरणं गोवर्द्धनोधारणम्॥
कंसाच्छेदन कौरवादिहननं, कुन्ती सुताः पालनम्।
एतद्भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्॥
कस्तूरोतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनम् सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं वर्हावतंसप्रियम्।
श्रीवत्साङ्कमुदार कौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्॥
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतम्।
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे।

सर्वमंगल . मंगल्ये, शिवे सूर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सृष्टि स्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमयी नारायणि नमोऽस्तुते ॥
शरणागत - दिनार्त परित्राण - परायणे ।
सर्वस्यार्तिं हरेदेवि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥
जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥
देवि प्रपन्नार्तिहरे, प्रसीद प्रसीद मार्त जगतो खिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवी चराचरस्यः ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं ममदेव देव ॥
यानि कानि च पापानि, ज्ञाता ज्ञात कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे - पदे ॥
चन्द्र तपै सूरज तपै, उडुगण तपै आकाश ।
इन सबसे बढ़कर तपै, सतियों का सुप्रकाश ॥
जय जय श्री राणी सती, सत्य पुँज आधार ।
चरण कमल धरि ध्यान में, प्रणवहुँ बारम्बार ॥
मेरा अपना कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोय ।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागत है मोय ॥
मैया सब कुछ मांगल्यो, जो कुछ मेरे पास ।
दो नैणा मत मांगियों, थारै दरश की आश ॥
सेवा, पूजा, बन्दगी, सभी आपके हाथ ।
मैं तो कछु जाणू नहीं, थे जाणो मेरी मात ॥
जगदम्बा, जग तारणी, राणी सती, मेरी मात ।
भूल चूक सब माफ कर, रखियो सिर पर हाथ ॥

द्वादश ज्योर्लिंगानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥
परल्यां बैद्यनाथं च, डाकिन्यां भीम शंकरम ।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारुका वने ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं, त्र्यम्बकं गौतमी तटे ।
हिमालये तु केदारं घृसुणेशं शिवालये ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजनकृतं पापं, स्मरणेन विनश्यति ॥

卐

द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा निर्देश

१ श्री सोमनाथ—श्री सोमनाथजी प्रभास-क्षेत्र (कठियावाड़) में है। सोमनाथ का ज्योतिर्लिग गर्भगृह के नीचे एक गुफा में २२ सोढ़ियाँ नीचे उतर कर है। वहाँ बराबर दीपक जलता रहता है। अहमदाबाद से वीरमगाँव जाना चाहिये। वहाँ से सोमनाथ के लिए गाड़ी बदलनी पड़ती है।

२—श्री मल्लिकार्जुन —श्री शैल पर्वत पर विराजमान है जो आंध्र प्रांत के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के तट पर स्थित है। इस स्थान को जाने के लिये वाल्टेयर या विजयवाड़ा से गाड़ी पकड़नी पड़ती है।

३—श्री महाकालेश्वर— श्री महाकालेश्वर जोतिर्लिंग क्षिप्रानदी के तट पर उज्जयिनी नगरी में है। इसका एक नाम अवन्तिकापुरी भी है जो भारत की सुप्रसिद्ध सप्तपुरियों में एक है। यह स्थान मथुरा से बम्बई को जाने वाली मथुरा-नागदा लाइन के प्रसिद्ध नागदा स्टेशन के निकट है।

४—श्री केदारनाथ—उत्तराखण्ड में बदरीनाथ और केदारनाथ ये दो प्रधान तीर्थ हैं दोनों के दर्शन का बड़ा महत्व है।

५—श्री ओङ्कारेश्वर—यह स्थान नर्मदा नदीके तट पर अवस्थित है। उज्जैन से खण्डवा जाने वाली रेलवे की छोटी लाइन पर मोरटक्का नाम का स्टेशन है। वहाँ से यह स्थान ७ मील दूर है। उज्जैन से मोरटक्का ८९ मील और खण्डवा से ३७ मील है। वहाँ नर्मदा की दो धाराएँ होकर बीच में एक टापू-सा बन गया है जिसे मान्धाता पर्वत या शिवपुरी कहते हैं। इसी मान्धाता पर्वत पर ओंकारेश्वर अवस्थित हैं।

६—श्री भीमाशंकर—यह बम्बई से पूर्व की ओर करीब ७० मील के फासले पर और पूना से उत्तरकी ओर करीब ४३ मील की दूरी पर भीमा नदी के तट पर अवस्थित है। बम्बई से पूना की ओर जाने वाली रेलवे की लाइन पर नेराल नामक स्टेशन पर उतरना चाहिये। वहाँ से भीमाशंकर का स्थान पूर्व की ओर १६ मील ।

७—श्री त्र्यम्बकेश्वर—यह ज्योतिर्लिङ्ग बम्बई प्रान्त के नासिक जिले में है। "नासिक रोड" स्टेशन से छः मील की दूरी पर

नासिक पंचवटी है जहाँ से मोटर के रास्ते पर १८ मील दूर गोदावरी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर का स्थान है।

८—श्री विश्वेश्वर—श्री विश्वेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग वाराणसी (काशी) में विराजमान है।

९—श्री बैद्यनाथ—यह स्थान संथाल परगनामें जसीडीह स्टेशन से ३ मी दूर एक ब्रांच लाइन पर है।

१०—श्री नागेश्वर—यह स्थान गोमती-द्वारका से बेट-द्वारका को जाते समय १२-१३ मील पूर्वोत्तर को ओर रास्ते में पड़ता है। द्वारका से इस स्थान पर जाने के लिये मोटर तथा बैलगाड़ी का प्रबन्ध है।

११—श्री सेतुबन्ध रामेश्वर—यह ज्योतिर्लिङ्ग सेतुबन्ध रामेश्वर में है।

१२—श्री घुश्मेश्वर—मनमाड से ६६ मील दूर दौलताबाद स्टेशन है। वहां से १२ मील दूर बेरुल गांव के पास यह स्थान है।

॥ ज्योतिर्लिंग माहात्म ॥

सर्वकामप्रदं चैव दर्शनात्पापहारकम्।
प्रसिद्धं त्रिषुलोकेषु भुक्तिमुक्तिप्रदं सताम्॥
ज्योतिर्लिङ्गमिदं श्रेष्ठ दर्शनात्पूजनादपि।
सर्वपापहरं दिव्यं भुक्तिवर्द्धनमुत्तमम्॥

—शिवपुराण

अर्थ—सभी पापों को दूर करने वाला तथा सम्पूर्ण कामना को पूर्ण करने वाला तीन लोकों में विख्यात यह शिवलिंग सत्पुरुषों को भुक्ति तथा मुक्ति देनेवाला है। मुक्ति को बढ़ानेवाला उत्तम और दिव्य श्रेष्ठ इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन और पूजन से सब पाप दूर होते हैं।

रुद्राक्ष

आंवले के सदृश्य रुद्राक्ष श्रेष्ठ है। बेर के सदृश्य रुद्राक्ष मध्यम है तथा छोटे आकार का रुद्राक्ष सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। रुद्राक्ष गोल तथा कीट भक्षित, क्षत-विक्षत रहित होना चाहिये। रुद्राक्ष में स्वभावतः छिद्र रहते हैं यह प्रायः देखने में आता है और वही रुद्राक्ष सर्वोत्तम है और सब मध्यम है।

रुद्राक्ष एक मुखी से चौदह मुखी तक प्राप्त है ऐसा शिव पुराण, देवी भागवतादि पुराणों में वर्णन है। इन सबों का प्रभाव भी भिन्न-२ है। जैसे :—

एक मुखी —यह सभी प्रकारों के उपद्रवों का नाश करता है और जहाँ रहता है वहाँ लक्ष्मी स्थिर रहती है।

दो मुखी—यह सभी प्रकार की कामनाओं की सिद्धि देता है तथा गोहत्या जैसे पाप का भी दोष दूर करता है।

तीन मुखी—यह विद्या प्रदान करने वाला है।

चार मुखी— यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का देनेवाला है तथा मनुष्य हत्या के पाप के दोष को भी दूर करता है।

पाँच मुखी—यह सभी कामनओं को पूर्ण करता है तथा सभी पाप दोष दूर करता है। मोक्ष भी प्रदान करता है। यही अधिक पाया जाता है।

छः मुखी—यह ब्रह्म हत्या आदि पापों के दोष को दूर करता है।

सात मुखी—यह दरिद्रता को दूर कर धनवान बनाता है।

आठ मुखी—यह सभी प्रकार के विघ्नों का नाश करता है। अल्पायु को दीर्घायु प्रदान करता है।

नौ मुखी—यह ऐश्वर्य की वृद्धि करता है।

दस मुखी—यह सभी कामनाओं की पूर्ति करता है।

ग्यारह मुखी—यह सभी जगह विजय कराता है।

बारह मुखी—यह नेत्र के दोषों को दूर करता है। बुद्धि तथा स्वास्थ्य मैं उन्नति करता है।

तेरह मुखी—यह सौभाग्य तथा मंगल दायक है।

चौदह मुखी—यह सभी पापों का क्षय करता है और परमोच्च पद प्राप्त कराता है। यह रुद्राक्ष दुर्लभ है।

१९८७ में जाने वाले काँवड़ियों की नाम सूची

(१) श्री बासुदेवजी शर्मा
(२) ,, राम प्रसाद देवड़ा
(३) ,, साँवरमल कसेरा
(४) ,, पुरुषोत्तम लाल सुरेका
(५) ,, बालगोविन्द केजड़ीवाल
(६) ,, गोविन्द प्रसाद ,,
(७) ,, जगदीश डीडवानिया
(८) ,, सुशील सिंघानियाँ
(९) ,, हेमन्त सिंघानियाँ
(१०) ,, केशव प्रसाद जटिया
(११) ,, सुरेश कुमार कसेरा
(१२) ,, अनुप कुमार अग्रवाल
(१३) ,, सुरज भण्डारी
(१४) ,, भजन लाल डँगला
(१५) ,, कृपा शंकर सिंह
(१६) ,, श्रीबल्लभजी इनानी
(१७) ,, सुभाष केड़िया
(१८) ,, पवन कुमार अग्रवाल
(१९) ,, मंजु सराफ
(२०) ,, दुर्गा प्रसाद जालान
(२१) ,, शिवरतन देवड़ा
(२२) ,, ओम प्रकाश शर्मा
(२३) ,, महावीर प्रसाद शर्मा
(२४) ,, राजकुमार शर्मा
(२५) श्री राम कुमार जैन
(२६) ,, किशन कुमार जालान
(२७) ,, दिनेश कुमार मर्दा
(२८) ,, आनन्द भौतिका
(२९) ,, जुगल अग्रवाल
(३०) ,, नन्दकिशोर धेलिया
(३१) ,, काशी धेलिया
(३२) ,, अशोक पोद्दार
(३३) ,, अरूण पोद्दार
(३४) ,, विजय धानुका
(३५) ,, सन्तोष धानुका
(३६) ,, राजकुमार सोंथलिया
(३७) . राजकुमार टोबड़ेवाला
(३८) ,, राजकुमार सरावगी
(३९) ,, विजय कुमार सराफ
(४०) ,, सजन कुमार सराफ
(४१) ,, राजकुमार भिवानीवाला
(४२) ,, प्रदीदकुमार तोलासरिया
(४३) ,, विमल अरोड़ा
(४४) ,, सुरेश कुमार राठी
(४५) ,, पवन कुमार तोदी
(४६) ,, अशोक सोंथलिया
(४७) ,, राजेश भावसिंहका
(४८) ,, महेश कुमार सुरेका

(४९) श्री तपन कुमार दे